सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक)	50 यु.एस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

नवम्बर, 2017 वर्ष 16 अंक 09

सीख की बातें

लिखना पढ़ना खुद भी सीखो औरों को सिखलाओ
हुनर जो तुम को आता है वह औरों तक पहुंचाओ
ईश ज्ञान ही ज्ञान है उत्तम, मन में यह बैठाओ
क्या है बुरा और क्या है भला यह हर एक को बतलाओ
स्वयं सेवा और जन सेवा को, तुम उद्योग लगाओ
काम मिले औरों को तुम से खुद का काम बनाओ
प्रतिदिन यदि व्यायाम करो तो स्वस्थ्य रहेंगे मन मस्तिष्क
स्वच्छ बनाओ आस–पास को स्वच्छता अपनाओ
खेती में तुम मेहनत करके ग़ल्ला खूब उगाओ
खुद खाओ औरों को खिलाओ नेकी खूब कमाओ
जहां रहो जैसे भी रहो निर्माता को मत भूलो
रहो उपासक निर्माता के प्रेम भाव फैलाओ

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल ह़यी हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	07
विकास की योजनाएं और हम	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	08
मौजूदा हालत में खैरे उम्मत	हज़रत मौ0 सय्यिद मु0 राबे हसनी नदवी	11
इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद	हज़रत मौ0 अबुल हसन अली नदवी रह0	15
पवित्र कुर्आन की मौलिक शिक्षाएं	हज़रत मौलाना सय्यिद राबे हसनी नदवी	14
आदर्श शासक	अतहर हुसैन	18
जज़्ब–ए–ईसार व हमदर्दी	मौ0 सैय्यिद अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह0	20
इस्लाम की महिलाएं और दीन	मौ0 सैय्यिद मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी	23
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	25
नमाज़ की हक़ीक़त व अहम्मीयत	मौलाना मंजूर नोमानी रह0	27
दुन्या की बका दीने इसलाम की	इदारा	31
यह मुल्क हमारा है हम इसी के	मौलाना अबुल कलाम आज़ाद रह0	36
तीन तलाक़ों का बयान	उबैदुल्लाह सिद्दीक़ी	39
उर्दू सीखिए	इदारा	42

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-निसाः

अनुवाद-

और वे कहते हैं फरमांबरदारी (अज्ञापालन) स्वीकार है फिर जब आपके पास से निकलते तो एक गिरोह रातों—रात जो बात वे कह रहे थे उसके खिलाफ़ मश्वरा करता है और वे जो कुछ रातों को मश्वरे करते हैं अल्लाह वह सब लिख रहा है, बस आप उनसे मुंह फेर लीजिए और अल्लाह पर भरोसा रखिये और काम बनाने के लिए अल्लाह ही काफ़ी है(81) भला क्या वे क़ुरआन पर सोच—विचार नहीं करते बस वह अगर अल्लाह के अलावा किसी और की ओर से होता तो वे उसमें बड़ा अंतर पाते[1](82) और जब उनके पास अमन या डर की कोई बात पहुंचती है तो उसको फैला देते हैं और अगर वे उसको पैग़म्बर तक और अपने ज़िम्मेदारों तक पहुंचा देते तो उनमें जो जांच करने वाले हैं वे उस की जांच कर लेते और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल (कृपा) व रहमत न होती तो कुछ के सिवा सब शैतान ही के पीछे हो लेते[2](83) तो आप अल्लाह के रास्ते में जंग कीजिए आप पर केवल आपकी ज़िम्मेदारी डाली गयी है और ईमान वालों को भी उभारिए शायद कि अल्लाह काफ़िरों का ज़ोर रोक दे और अल्लाह बड़े ज़ोर वाला और बहुत सख़्त सज़ा देने वाला है[3](84) जो अच्छी सिफ़ारिश करेगा उसके लिए उसमें हिस्सा है और जो बुराई की सिफारिश करेगा उसके लिए उसमें बोझ है, और अल्लाह हर चीज़ को उसका हिस्सा देने का सामर्थ्य रखता है[4](85) और जब तुम को कोई सलाम करे तो तुम उससे बेहतर तरीक़े पर सलाम करो या उन्हीं शब्दों में जवाब दे दो, बेशक अल्लाह हर चीज़ का हिसाब रखने वाला है[5](86) अल्लाह जिसके सिवा कोई उपास्य नहीं वह ज़रूर तुम्हें क़यामत के दिन इकट्ठा करेगा इसमें कोई संदेह नहीं और अल्लाह से बढ़ कर सच्ची बात आख़िर किस की हो सकती है(87) फिर तुम्हें क्या पड़ी है कि तुम मुनाफ़िक़ों के बारे में दो पार्टियों में बट गए जब कि अल्लाह ने उन की करतूतों के कारण उन्हें उलटा फेर दिया है, क्या तुम चाहते हो कि जिसको अल्लाह ने रास्ते से हटा दिया उसको तुम राह पर ले आओ जब कि जिस को अल्लाह बे राह कर दे आप उसके लिए हरगिज़ रास्ता नहीं पा सकते[6](88) वे तो चाहते ही हैं कि जैसे उन्होंने कुफ़्र किया तुम भी कुफ़्र करने लग जाओ फिर तुम सब बराबर हो जाओ तो तुम उनमें से किसी को उस

समय तक दोस्त मत बनाना जब तक वे अल्लाह के रास्ते में हिजरत न कर लें फिर अगर वे न मानें तो तुम उनको जहां भी पाओ उनको पकड़ो और मारो और उनमें से किसी को दोस्त और मददगार मत बनाओ[7](89) सिवाय उन लोगों के जो ऐसी क़ौम से मिल जाएं जिससे तुम्हारा आपस का समझौता है या वे इस हाल में तुम्हारे पास आएं कि उनके दिल इससे भर चुके कि वे तुमसे लड़ें या अपनी क़ौम से लड़ें और अगर अल्लाह चाहता तो उनको तुम पर नियंत्रण दे देता तो वे तुम से ज़रूर लड़ते, बस अगर वे तुम से एकाग्र हो जाएं और न लड़ें और सुलह की बात कहें तो अल्लाह ने उनके विरुद्ध कोई रास्ता नहीं रखा[8](90) कुछ दूसरे लोग तुम्हें ऐसे भी मिलेंगे जो यह चाहते हैं कि तुम्हारे साथ इत्मेनान से रहें और अपनी क़ौम के साथ भी इत्मेनान से रहें मगर जब उनको फ़ितने (उपद्रव) की ओर फेरा जाता है तो वे उस में पलट पड़ते हैं बस अगर वे तुम से मुक़ाबले से बाज़ न रहें और न सुलह की बात कहें और न अपने हाथ रोकें तो तुम उनको जहां भी पाओ उनको पकड़ो और मार दो, यह वे लोग हैं जिन पर हमने तुम्हें खुला अधिकार दे दिया है(1)।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. मुनाफ़िकों का उल्लेख है कि आकर आज्ञापालन की बात करते हैं और चुपके चुपके मुसलमानों को नुक़सान पहुंचाने की नीतियां बनाते हैं, जब कहा जाता है तो जवाब देते हैं कि हम सब मान लें लेकिन कुर्आन अल्लाह की वाणी है इसका क्या प्रमाण है इसके जवाब में कहा जा रहा है कि अगर वह मानव वाणी होता तो इसमें ज़रूर अंतर व विरोधाभास मिलता, जो विचार करेगा वास्तविकता तक पहुंचेगा।

2. मुनाफ़िकों और ना समझ मुसलमानों को चेताया जा रहा है कि हर चीज़ को सुनते ही उड़ा न दिया करें जब तक जांच न हो जाए, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किसी को ज़कात वसूल करने के लिए एक समुदाय के पास भेजा वे स्वागत करने के लिए निकल कर आए तो किसी ने उनसे कह दिया कि यह तो तुम्हें मारने आ रहे हैं बस वह सज्जन वापस हो गए और यह ख़बर फैल गई कि सब इस्लाम से फिर गए और अधिकतर लोगों ने बिना जांच के राय दी कि उन लोगों से तुरंत मुक़ाबला करना चाहिए, मगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी दया थी कि वह आवश्यकतानुसार निर्देश देता रहता है, अगर ऐसा न होता तो अधिकतर लोग ग़लत रास्ते पर पड़ जाते और नाहक उन पर हमला कर देते।

3. जहां युद्ध के दूसरे साल बद्र के स्थान पर वादे के अनुसार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सहाबा के एक दल के साथ गए, अल्लाह ने ऐसी धाक बैठाई कि काफ़िरों की सेना को आने ही की हिम्मत न हुई, जाते हुए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने

शेष पृष्ठ....19 पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

रिया अर्थात "दिखावा" की हुरमतः-

कुर्आन करीम की जिन आयतों में दिखावे को निषेध बयान किया गया है उनका अनुवादः

और उनको सिर्फ यह आदेश दिया गया था कि वे अल्लाह की इबादत दीन को उसके लिए एकाग्र हो कर करें और नमाज़ कायम करें और जकात अदा करें और ठीक उम्मत का यही दीन (धर्म) है।

(सू—रए—बय्यिनाः 5)

दूसरी जगह इरशाद है—

ऐ ईमान वालो! अपनी खैरात का एहसान जता कर और तकलीफ दे कर अकारत न करो उस शख्स की तरह जो अपना माल लोगों को दिखावे को खर्च करता है और अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान नहीं रखता है तो उसकी खैरात की उपमा उस चट्टान की तरह है जिस पर मिट्टी पड़ी है फिर उस पर जोर का पानी गिरा तो सब को बहा ले गया कुछ उसमें उनके हाथ न लगा जो उन्होंने कमाया था और अल्लाह काफिरों को हिदायत नहीं देता, लोगों को दिखाते हैं और अल्लाह को याद नहीं करते मगर थोड़े।

साझे की चीज़ से खुदा बेनियाज़ हैः-

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि से फरमाते हुए सुना है कि कयामत के दिन सब से पहले शहीद को बुलाया जायेगा और उससे एक एक नेमत गिनवाई जायेगी, वह सारी नेमतों का इक़रार करेगा फिर कहा जायेगा कि इन नेमतों का क्या शुक्र अदा किया वह कहेगा परवर दिगार मैंने तेरी राह में जंग की यहां तक कि शहीद हो गया, अल्लाह तआला फरमायेगा, तू झूठा है तू ने सिर्फ इसलिए जंग की थी कि मैं बहादुर कहलाऊँ। सो तू बहादुर मशहूर हो चुका अब मुझ से क्या लेगा, फिर उसको मुंह के बल घसीटने का हुक्म दिया जायेगा और वह आग में डाल दिया जायेगा।

फिर आलिम और क़ारी को बुलाया जायेगा और अल्लाह तआला उनसे भी अपनी नेमतों का इकरार लेगा और वह इकरार करेंगे, फिर उनसे कहा जायेगा कि इन नेमतों का क्या शुक्र अदा किया? वह कहेगा ऐ मेरे रब मैंने तेरा इल्म सीखा और सिखाया, कुर्आन शरीफ पढ़ा और पढ़ाया, अल्लाह तआला फरमायेगा तुम झूठ बोलते हो, तुम ने इल्म सिर्फ इसलिए सीखा था कि तुम आलिम और कारी कहलाओ, मान सम्मान हासिल हो, सो दुन्या में तुम्हारी शोहरत हो चुकी, तुम आलिम व क़ारी मशहूर हो गये, तुम्हारा मतलब हासिल हो गया, अब मुझ से क्या लोगे फिर उसको चेहरे के बल घसीटने का आदेश होगा

शेष पृष्ठ....24 पर

विकास की योजनाएं और हम

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

अल्लाह तआ़ला ने हम मुसलमानों को एक अहम दुआ बताई है जो लगभग हर मुसलमान को याद होती है और वह उसे बराबर पढ़ता भी है वह दुआ यह है—

"रब्बना आतिना फिद्दुन्या हसनतंव व फिल आखिरति हसनतंव वक़िना अज़ाबन्नार"।

(अल बकराः 201)

अर्थः-ऐ हमारे रब हम को दुन्या में अच्छी हालत अता कर और आखिरत में भी अच्छी हालत अ़ता कर और हम को आग से यानी जहन्नम की आग से बचा ले। दुन्या की अच्छी हालत या आखिरत की अच्छी हालत की दुआ इस तरफ इशारा करती है कि दोनों के लिए मुनासिब कोशिश और प्रयास करना होगा सिर्फ दुआ से काम न चलेगा, किसान जब दुआ करता है कि ऐ अल्लाह हमारे खेत में खूब ग़ल्ला पैदा हो तो वह सिर्फ दुआ नहीं करता बल्कि खेत में मेहनत भी करता है, कोई व्यापारी जब दुआ करता है कि ऐ अल्लाह मुझे खूब नफ़ा दे तो सिर्फ़ दुआ नहीं करता बल्कि व्यापार में पैसे लगाकर मुनासिब मेहनत करता है जब हम इस दुन्या में अच्छी दशा की दुआ मांगते हैं तो हम को उस के लिए प्रयास करना ही होगा और उसी प्रयास का नाम है विकास के लिए प्रयास बेशक हमारे देश में बड़ी तादाद गरीबों की है और यह तादाद मुसलमानों में कुछ जियादा ही है और हर शख़्स चाहता है कि उसकी ग़रीबी दूर हो, हमारी सरकार को भी इस की फिक्र है और उसने ग़रीबी दूर करने और खुशहाली लाने की बहुत सी लाभदायक योजनाएं चला रखी हैं हम को उन योजनाओं से फ़ाइदा उठाना चाहिए, हमारे नज़दीक उन योजनाओं में सब से अच्छी योजना "कौशल विकास" की योजना है इस योजना में नव युवकों को कोई हुनर सिखाया जाता है फिर हुनर सीख कर नव युवक नौकरी भी कर सकता है और अपना रोजगार भी कर सकता है, मुस्लिम नव युवकों को चाहिए कि इस योजना में शरीक हो कर कोई हुनर सीखें और फिर उस हुनर से रोजी कमाएं। शहरों में बहुत से ऐसे ग़रीब मुस्लिम नवजवान हैं जो किसी दुकान पर कम उजरत पर काम करके अपना गुज़र बसर करते हैं अगर वह कोई हुनर सीख लें तो उन की आमदनी में इज़ाफ़ा हो सकता है।

देहातों में कुछ मुसलमान तो ऐसे हैं जिनके पास अच्छी खेती है, वह अपने खेतों के काम के लिए मज़दूर या नौकर भी रखते हैं, लेकिन बहुत से ऐसे मुसलमान हैं जिनके पास बहुत थोड़े खेत हैं वह अपने खेत में खुद अपने घर के लोगों की मदद से खेती करते हैं लेकिन दोनों तरह के यह किसान नई तकनीक

से खेती नहीं कर रहे हैं अगर सरकारी कर्मचारियों से मदद ले कर नई तकनीक अपनाएं तो उनकी आमदनी बढ़ सकती है और जो ग़रीब हैं उनकी ग़रीबी दूर हो सकती है।

मुस्लिम नव जवान की बड़ी तादाद अरब देशों में काम कर रही है जिस से उनकी माली हालत सुधरी है और बाहर की करन्सी ला कर अपने देश को भी फाइदा पहुंचा रहे हैं। फिर भी देहातों में मुस्लिम नवजवानों की एक तादाद मज़दूरी का भी काम करती है। अगर वह कौशल विकास से जुड़ कर कोई हुनर सीख लें तो उनकी हालत और सुधर सकती है।

आज कल कई काम ऐसे हैं जिनको अपना कर अच्छी कमाई की जा सकती है जैसेः—

मुर्गी पालनः- मुर्गी पालने का काम दो तरह से होता है एक तो अण्डे पैदा करने के लिए, अपने मुल्क में अण्डों की बड़ी खपत है, दूसरे ब्वाइलर तैयार कर के गोश्त के लिए उनको फरोख़्त करना इस काम में ज़ियादा जगह की भी ज़रूरत नहीं होती फिर भी कुछ जगह तो चाहिए ही है।

मधु मक्खी पालनः- यह काम भी अच्छे नफे का है और इसमें भी ज़ियादा जगह न चाहिए मगर कुछ जगह तो लेना ही होगी।

मछली पालनः- इस के लिए खासी जगह चाहिए, अगर कोई जगह हासिल कर सके तो खासे नफे का काम है।

बकरी पालनः- इस काम के लिए भी खासी जगह चाहिए और उनके रहन सहन के साथ चरागाह भी होना चाहिए लेकिन अच्छे नफे का काम है।

डेरी लगानाः- गाय भैंस पाल कर दूध का कारोबार करना, इसमें भी खासी जगह चाहिए, इसी तरह के और भी बहुत से रोज़गार हैं जिन की रहनुमाई कौशल विकास योजना से मिल सकती है।

किसी भी काम के लिए उसकी अच्छी तरबीयत ज़रूरी है। प्रशिक्षण के बिना काम में नुक़सान हो सकता है, कोई भी कारोबार हो उसमें खासे पैसों की ज़रूरत है पैसे लगा कर ही यह कारोबार किये जा सकते हैं आजकल हमारी सरकार इन तमाम कामों के लिए क़र्ज़ दे रही है मगर यह कर्ज़ सूदी होता है, सूद चाहे जितना कम हो इस्लाम में सूद लेना देना हराम है, मौजूदा सूरते हाल में उलमा को ग़ौर करके गरीबों के लिए कोई राह निकालना चाहिए। ताकि मुसलमानों की ग़रीबी दूर हो सके।

बेशक विकास (तरक्की) अच्छी चीज़ है, उससे एक मुसलमान की दुन्या की हालत सुधरेगी जिसकी वह दुआयें करता रहता है और ग़रीबी ना पसन्दीदा हालत है जिसे इन्सान मजबूरन बरदाश्त करता है उसे दूर ही होना चाहिए लेकिन मुसलमानों को यह याद रखना चाहिए कि विकास की धुन में आखिरत को भुला न देना चाहिए, ऐसा विकास, ऐसी तरक़्क़ी बेकार है जो आख़िरत को पीठ पीछे कर

दे इस सिलसिले में पवित्र कुर्आन की कुछ आयतें पढ़ लेना ज़रूरी हैं:–

कुछ लोग हैं जो दुआ में कहते हैं कि ऐ हमारे रब हमारी दुन्या की हालत अच्छी करदे। (ऐसे लोग या तो आखिरत की ज़िन्दगी पर यक़ीन नहीं करते या आखिरत को नज़रअन्दाज़ करते हैं) ऐसे लोगों के लिए आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं है, यानी जन्नत के इनआमात में कोई हिस्सा नहीं है (यानी उन के लिए जहन्नम की सज़ा है) और कुछ लोग हैं जो अपनी दुआ में कहते हैं ऐ हमारे रब हमारी दुन्या की हालत भी अच्छी कर दे और आख़िरत की जिन्दगी की हालत भी अच्छी कर दे और हमें आग से यानी जहन्नम की आग से बचा ले। ऐसे ही लोगों के लिए (आखिरत में) उनकी कमाई का बदला मिलेगा, और अल्लाह तो जल्द हिसाब करने वाला है। (अल–बक़राः 200 से 202 तक का मफ़्हूम)

पवित्र कुर्आन की सू–रए–बनीइस्राईल की आयत 18,19 का भावार्थ भी पढ़ लीजिए "और जो कोई शीघ्र वाली चीज़ चाहता है अर्थात केवल दुन्या चाहता है तो हम उसको जितना चाहते हैं और जिसके लिए चाहते हैं दुन्या दे देते हैं फिर हम उसके लिए जहन्नम नियुक्त कर देते हैं जिसमें वह अपने विषय में बुरा सुन कर मर्दूद (अधर्मी) हो कर प्रवेश करेगा"।

"और जो कोई आख़िरत की भली ज़िन्दगी चाहता हो और उसके लिए उसके अनुकूल उचित प्रयास भी करे जब कि वह ईमान वाला भी हो तो हम उसके प्रयास को स्वीकृत प्रदान करेंगे अर्थात उसको जहन्नम से बचा कर जन्नत का पुरस्कार देंगे।"

सू–रए–शूरा की आयत 20 का भावार्थ भी पढ़ लीजिए "जो शख़्स आखिरत की खेती चाहता हो हम उसके लिए उसको बढ़ा कर देते हैं यानि जो आखिरत की जिन्दगी भली चाहता है और उसके लिए कोशिश करता है तो हम उसको खूब बढ़ा कर सवाब देते हैं, और जो दुन्या की खेती चाहता है अर्थात् केवल सांसारिक लाभ चाहता है तो हम उसको उसमें से दुन्या का कुछ भाग दे देते हैं परन्तु आखिरत में उसका कोई हिस्सा नहीं होता अर्थात जन्नत से कुछ नहीं मिलता वह जहन्नम में जलता है।

इन आयतों से यह ज्ञात हुआ कि आख़िरत को भुला कर केवल दुन्या चाहना बड़े घाटे का सौदा है अपितु अपने विनाश का सौदा है। अतः हम को चाहिए कि विकास के प्रयास में आखिरत को न भूलें और जिस प्रकार विकास के लिए विभिन्न प्रयास किये जाते हैं आखिरत का जीवन बनाने के लिए भी प्रयास में कोताही न हो, जो लोग दीन का ज्ञान रखते हैं उनको तो कुछ बताना नहीं है परन्तु जो भाई दीन से अवगत नहीं हैं और विकास के प्रयास में मग्न हैं, दीन का काम करने वालों को चाहिए और हम को भी चाहिए

शेष पृष्ठ....14 पर

मौजूदा हालत में ख़ैरे उम्मत की जिम्मेदारी
(वर्तमान परिस्थिति में मुसलमानों का उत्तर दायित्व)

—हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

—हिन्दी इम्लाः हुसैन अहमद

मुसलमानों को जो मुकम्मल दीन दिया गया और उन के अन्तिम नबी पर शरीअ़त (इस्लामिक विधान) को मुकम्मल किया गया उस दीन में इंसान को आज़ादी और आपस की बराबरी की हिदायत के साथ खैर उम्मत (सब से अच्छा समुदाय, उत्तम समुदाय) की उपाधि दे कर भले आचरण और भले कर्म तथा स्वतंत्रता और मानवीय मान्यताओं का आबद्ध किया गया था जिस को पाश्चात सभ्यता में उपेक्षित करते हुए स्वतंत्रता को अशलीलता के भेंट चढ़ा दिया और फिर स्वतंत्रता के अपने इस दृष्टिकोंण को पूर्वीय सोसाइटी पर लागू कर दिया हमारी पूर्वीय सोसाइटी का कर्तव्य है कि पश्चिम से आए हुए विचारों तथा दर्शन से केवल भले तत्व को अपनाएं और बुरे तत्व से पूर्णतः दूर रहें और यह उत्तरदायित्व सब से अधिक मुसलमानों पर है जिनको खैरे उम्मत (उत्तम समुदाय की उपाधि मिली हुई है।

पिछली शताब्दियों में मुसलमानों को अपने दीन और इस्लामिक सन्देश की ओर ध्यान दिलाने के जो प्रयास हुए और मुसलमानों को उन की विगत प्रतिष्ठाओं को याद दिलाने के लिए जो कुछ लिखा और प्रयास किया जाता रहा था उनका यह प्रभाव होता था कि मुसलमानों में दीनी जागृति तथा दीन का आभास और लगाव पैदा हो रहा था अब कुछ अधिक ध्यान के साथ इसकी आवश्यकता है कि मुसलमानों के उन प्रयासों की चरचा की जाए जिन से उन्होंने संसार को भले आचरणों तथा मानवता का पाठ पढ़ाया, और क़ौमों को पशुता से निकाल कर मानवता के मार्ग पर लगाया उन्होंने पीड़ित दुन्या को आपत्तियों से बाहर निकाला, गुलामों को आज़ाद कराया, औरतों को मर्दों की सामग्री की परिस्थिति से निकाल कर मर्दों का जीवन साथी बनाया। बेटियों को मान सम्मान का साधन बताते हुए उनको उच्च स्थान दिलाया मनुष्य तो मनुष्य है हर जीवधारी के साथ सद्व्यवहार करने का पाठ पढ़ाया मानव समानता की ऐसी शिक्षा दी कि देखने वाले चकित रह गए और इस्लाम की गुणवत्ता तथा श्रेष्ठता को स्वीकार कर लिया। परिणाम स्वरूप लोग लगातार इस्लाम में प्रवेश करने लगे और इतिहास गवाह है कि पूरी पूरी क़ौमों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया।

ऐसे उदाहरण भी हैं कि मुसलमानों ने एक क्षेत्र पर विजय प्राप्त की उस क्षेत्र के लोगों ने मुसलमानों के खलीफा (बादशाह) से शिकायत की कि आप लोग कहते हैं कि मुसलमान अचानक आक्रमण नहीं करते पहले अपनी बात परस्तुत करते हैं, फिर बात न

मानने पर अक्रमण करते हैं, इस सेना ने ऐसा नहीं किया बात प्रस्तुत किए बिना हम पर अचानक आक्रमण कर दिया, इस शिकायत पर खलीफ़ा ने आदेश दिया की मुस्लिम सेनायें विजय किया हुआ क्षेत्र छोड़ कर वापस आजाएं फिर पहले अपनी दावत तथा सन्देश पेश करें और संधि द्वारा समस्या का समाधान करें इस में नाकामी के पश्चात ही आक्रमण करें अतः मुस्लिम सेनाओं ने विजय किया हुआ देश छोड़ दिया, और इस्लाम के बताए हुए तरीके पर अमल किया, जिस का परिणाम यह हुआ कि वह पूरा देश इस स्वभाव से प्रभावित हो कर इस्लाम में दाखिल हो गया।

इस्लाम ने मनुष्य की स्वतंत्रता तथा उसको मानवता से सुसज्जित करने का प्रयास उस काल में किया जब संसार के उस समय की नागरिकता में पश्चिमी देशों में बड़े छोटे का अनुचित अंतर उचित समझा जाता था और नैतिकता की अशलील घटनाओं को बुरा नहीं समझा जाता था, उसके मुकाबले में इस्लाम ने नया सन्देश दिया अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हर जीवधारी के साथ भले व्यवहार की शिक्षा दी यहां तक कि प्यासे कुत्ते को पानी पिलाने पर जन्नत की शुभ सूचना दी और एक बिल्ली को भूखा रख कर मार डालने पर आखिरत में दण्ड दिए जाने की सूचना दी।

गुलामों के सिलसिले में अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का स्वभाव और आप की शिक्षाएं स्पष्ट हैं, आपने अपने अन्तिम समय में जो वसीयत फरमाई वह यह थी कि "अपने रब की इबादत करते रहो और अपने गुलामों तथा बांदियों के साथ भला व्यवहार करो।"

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने अन्तिम समय में जिस अन्तिम सेना को प्रस्थान का आदेश दिया उस का सेना पति अपने गुलाम के पुत्र को बनाया सेना के प्रस्थान से पहले आप का देहान्त हो गया तो आप के खलीफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ ने सेना को भेजना चाहा तो लोगों ने कहा इस सेना में अरब के बड़े बड़े सरदार हैं अगर इस नवयुवक के स्थान पर किसी बड़े सरदार को सेना का नेतृत्व सौंपा जाए तो अधिक उचित बात होगी, मुसलमानों के खलीफा ने उत्तर दिया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस सेना का नेतृत्व जिस को सौंपा है उसको बाक़ी रखा जाएगा अतएव सब ने इस आदेश को माना और उन्हीं के नेतृत्व में सेना ने अपना काम किया और किसी को कोई आपत्ति न हुई।

इस्लाम ने निजामे जम्हूरियत (लोकतांत्रिक व्यवस्था) को मनुष्य की वास्तविक आवश्यकताओं से संबन्धित किया है, इस्लाम ने मनुष्य की दीनी तथा दुन्यावी जरूरतों का लिहाज रखा है, दीनी मान्यताओं के साथ सांसारिक आवश्यकताओं का भी ख्याल रखा है दीनी विषयों में इस बात की ताकीद की है कि समाज में

जो बड़ा है वह अपने छोटों को शुद्ध सत्य मार्ग पर चलाने की पूरी चिन्ता रखे मसलन बच्चा जब सात साल का हो जाए तो उसको नमाज़ पढ़ने का आदेश दो यानी सख़्ती और सजा के बिना उस को नमाज़ पढ़ने का ध्यान दिलाओ और जब बच्चा दस साल का हो जाए और नमाज़ न पढ़े तो मारो यानी सावधानी से उचित सजा दो।

एक महिला जिन से चोरी का अपराध हो गया था वह ऊँचे घराने की थीं, आप के पास सिफ़ारिश आई कि रिआयत फरमाएं, तो आप बहुत नाराज हुए और सिफारिश रद कर दी, दुन्यावी जीवन के विषय में आप ने यह तरीक़ा इख़्तियार फरमाया कि आदमी को कमाना चाएिह वह दूसरों का दस्तेनिगर (आश्रित) न बने, अतएव अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक भीख मांगने वाले को देखा तो उसको भीख देने के बजाए उस से पूछा कि तुम्हारे पास क्या है, उसने उत्तर दिया कि मेरे पास एक प्याला है और एक चादर, आप ने फरमाया उसे ले आओ, आप ने उस का सामान दो दिरहम में बेच दिया, उसमें से एक दिरहम उस को दे दिया और कहा इससे अपने खाने पीने का सामान खरीद लाओ और दूसरे दिरहम से एक कुल्हाड़ी खरीदी, कुल्हाड़ी में अपने हाथ से बेंट लगाया और उस को कुल्हाड़ी दे कर कहा कि जंगल से लकड़ी काट कर लाओ और उसे बेच कर अपनी रोटी रोजी का प्रबन्ध करो।

(सुनने अबी दाऊदः1641)

आप एक तरफ अपनी जरूरत मांगने वालों की मदद भी करते थे तो दूसरी तरफ खुद कमा कर खाने की तरगीब (प्रेरणा) भी देते थे और भीख मांगने को इस प्रकार के भले उपाय से रोकते थे।

एक शख्स ने अपनी बीमारी में जब यह समझा कि अब मेरा आखरी वक्त है तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया कि मैं अपनी पूरी जाइदाद इस्लाम के लिए वक़्फ़ करना चाहता हूं। आपने फरमाया नहीं नहीं पूरी जाइदाद मत वक़्फ़ करो, उस ने कहा अच्छा आधी, आपने फरमाया यह भी ज़ियादा है, उसने कहा एक तिहाई आपने फरमाया यह भी जियादा है मगर एक तिहाई स्वीकार है, और फरमाया कि तुम अपने बच्चों को मुहताज़ (आश्रित) छोड़ जाओ इस से बेहतर है कि उनके लिए कुछ कर के जाओ। यह है इस्लाम की शिक्षाएं जिन में दीन और दुन्या दोनों का खयाल रखा गया है।

दीन की यह बातें और इस तरह की सैकड़ों बातें इस्लामिक इतिहास के पन्नों में दबी हुई हैं उनको आधुनिक समाज के सामने लाने की आवश्यकता है ताकि वतनी भाईयों को भी मालूम हो कि इसलाम में सांसारिक समाज को क्या क्या उपहार दिये गये हैं और उन्हें यह आभास हो कि हमने भ्रांति से मुसलमनों को अत्याचारी और आतंकवादी समझ रखा था अगर किसी

मुसलमान से अत्याचार अथवा आतंकी कार्य हुआ हो तो यह उस का व्यक्तिगत कार्य है इन बुरे कामों का इस्लाम और मुसलमानों से कोई संबंध नही है। इस्लाम तो दीने रहमत (करूणा का धर्म) है इस्लाम के नबी नबीये रहमत (करूणा के दूत) हैं इस्लाम तो दूसरों का भला चाहने की दावत देता है और दूसरों का बुरा चाहने से रोकता है। आवश्यकता इस बात की है कि हम मुसलमान, अपने वतनी भाईयों और इस्लाम के विरोधियों के मन मस्तिष्क में इस्लाम और मुसलमानों के विषय में जो भ्रांतियां पैदा हो गई हैं उन को भले ढंग से दूर करने का प्रयास करें और गलत प्रोपेगण्डे की वास्तविकता खोल दें।

आज जब कि सारे संसार में मुसलमानों को निशाना बनाया जा रहा है और उनको बदनाम किया जा रहा है उन पर आरोप लगाए जा रहे हैं जिस के कारण हर स्थान पर मुसलामनों को जूझना पड़ रहा है और मुसलमानों के शुद्ध प्रयासों को हर स्थान पर पूरी शक्ति से दबाया जा रहा है अपितु अत्याचारी ढंग से कुचला जा रहा है, यूरोप हो एशिया या अमरीका हर जगह इस्लाम का नाम लेने वालों के लिए आपत्ति पैदा की जा रही है। जैसे कोई हिंसक शक्ति उभर रही हो और उसको कुचलने के लिए सब के सब लग जाएं जरूरत है कि इन भ्रान्तियों को हम वैध तथा प्रभावकारी तरीकों से जितना भी दूर कर सकें उस के लिए प्रयास करें और शुद्ध जानकारी के पश्चात भी जान बूझ कर हम पर जो अत्याचार किया जाए और अन्याय किया जाए तो हम उसका पूरी शक्ति तथा साहस से सामना करें और मुस्लिम नवयुवकों में जो गलतियां कुछ नासमझों की ओर से पैदा की जा रही हैं उन को इस्लामिक शिक्षाओं द्वारा दूर कर के इस्लामिक समाज को आने वाले खतरात से बचाएं।

❖❖❖

विकास की योजनायें.....

कि हम उन से हमदर्दी के साथ मिल कर बात करें और उनको बताएं कि "अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं है और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं"। इस कल्मे को ज़बान से कहें और दिल से मानें, पांचों वक्त की नमाज़ों की पाबन्दी करें, रमज़ान के रोज़े रखें, माल हो तो उसकी सालाना ज़कात दें, सामर्थ्य हो तो जीवन में एक बार हज़ करें, शरीअ़त ने जिन कामों का आदेश दिया है उनको अपनाएं और जिन कामों से रोका है उनसे रुक जाएं, शरीअ़त के मुताबिक़ शादी–विवाह करें इस्लाम में सन्यास नहीं है अच्छा खायें, अच्छा पहनें, अच्छा रहन सहन अपनाएं खूब कमाएं मगर शरीअ़त को न भूलें। अगर हम लोग इस तरह की कोशिश करेंगे तो हमारी आख़िरत भी बनेगी और हमारे भाइयों की आख़िरत भी बनेगी, अल्लाह हमारी मदद करे। ◆◆

–पिछले अंक से आगे

इस्लाम के तीन बुन्यादी अ़क़ायद

–हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह0) – अनुवादः मुहम्मद हसन अंसारी

नबियों के आवाह्न (दावत) की विधिः–

नबियों (अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम) ने सत्य को उजागर करने के लिए तथा लोगों के नज़र के भ्रम को तोड़ने के लिए दो प्रकार की विधियों का उपयोग कियाः–

1. अल्लाह तआला के गुणों को स्पष्ट रूप से बार–बार बयान किया इसलिए कि शिर्क (बहुदेववाद) तथा अज्ञान के ज़हर का इससे बढ़ कर कोई विषहर नहीं, शिर्क (बहुदेववाद) अज्ञान, अल्लाह से अस्वजनता, अल्लाह के अतिरिक्त से लगाव व उससे व्यस्तता का मूल कारण, खुदा से अवगत न होना तथा उसके गुणों व कर्मों से अनभिज्ञता या अनदेखी है, इसी लिए फरमायाः–

अनुवादः *"और वे अल्लाह को उतना नहीं समझते जितना वह है, जब कि सारी धरती क़यामत (महाप्रलय) के दिन उसकी मुट्ठी में होगी और उसके दाहिने हाथ में आकाश लिपटे हुए होंगे अल्लाह पवित्र है तथा वे लोग जो सहभागी व साक्षी ठहराते हैं उससे वह बहुत बुलंद है।*

(सूरः अज़्ज़ुमर–67)

2. अल्लाह के अतिरिक्त समस्त हस्तियों व सृष्टियों की वास्तविकता तथा उनकी वास्तविक प्रतिष्ठा की व्याख्या कर दी ताकि आंखों से परदा हट जाए और प्रकाश में देख लिया जाए कि वे वास्तव में क्या हैं और अन्य के लिए तथा अपने लिए वे कहां तक लाभप्रद व उपयोगी हो सकते हैं। उनके साथ आराधना व बन्दगी का मामला तथा उनसे लाभ–हानि व कार्य पूर्ति की अपेक्षा उनके समर्थन व संरक्षण पर विश्वास, उनके ज्ञान पर भरोसा तथा उनके सहारे जीना कहां तक ठीक व बुद्धि के अनुकूल है?

अल्लाह तआला के गुणों के सम्बन्ध में उन लोगों ने सैद्धान्तिक और क्रांतिकारी बातें कीं जिससे जीवन का रुख तथा मन मस्तिष्क की दिशा बदल जाती है, जैसेः– "समद" है, अर्थात सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड तथा संसार का हर कण अपना अस्तिस्व तथा अस्तित्व से सम्बन्धित वस्तुओं में उसका मोहताज है और वह कदापि किसी वस्तु में किसी का मोहताज नहीं। रचना व सृजन के साथ–साथ संसार का यह सार कारखाना ही वही अकेला चला रहा है तथा आकाश से ले कर धरती तक उसी की सत्ता और उसी का प्रशासन है।

अनुवादः *"सुन लो! उसी का काम है पैदा करना और उसी का काम है आदेश देना! आकाश से धरती तक वही काम की व्यवस्था करता है।*

(सूरः अस्सजदा–5)

और इस राजसत्ता में कोई उसका सहायक व सहभागी नहीं।

अनुवादः *"आप कह दीजिए, सारी प्रशंसाएं उस अल्लाह के लिए हैं, जिस की न संतान है*

और न ही सत्ता में कोई साझी तथा न कोई जिल्लत के समय में सहाक है और उसकी पूर्ण रूप से बड़ाई बयान करो।

(सूरः अल्इस्रा–111)

अनुवादः *"और न मुश्रिकों के उपास्यों का आकाशों और धरती में कुछ साझा है और न उनमें से कोई अल्लाह का सहायक है।*

(सूरः अस्सबा–22)

केवल उसी की सत्ता असीम, शक्ति न समाप्त होने वाली करुणा सागर अथाह और कोष समाप्तहीन है।

अनुवादः *"और धरती व आकाश के खज़ाने अल्लाह ही के हैं। (सूरः अल्मुनाफिकून–7)*

अनुवादः *"उसके करूणा व दया के हाथ खुले हुए हैं जैसे चाहता है खर्च करता है।*

(सूरः अल्माइदाः64)

अनुवादः *"और जिसको चाहता बेहिसाब देता है।*

(सूरः अल बकरह–122)

इसलिए लालची मनुष्य की झोली वही भर सकता है और उसकी संतुष्टि वही कर सकता है केवल उसी को आंतरिक व बाहरी रहस्य तथा हृदय की बातों का ज्ञान है और केवल उसी की ज़ात सर्वज्ञाता व सर्व दृष्टा है।

अनुवादः *"वह आंखों की चोरी व सीनों की छुपी हुई बातों को जानता है। (सूरः गाफिर–16)*

अतः केवल उसी के ज्ञान पर भरोसा किया जा सकता है तथा हृदय की गुप्त आकांक्षाओं और जीवन की असीम आवश्यकताओं को वही जान सकता हैं तथा वही पूरा कर सकता है, वही मनुष्य की रक्षा करता है और उसके संत्री मनुष्य की रक्षा हेतु ताएनात हैं।

अनुवादः *"प्रत्येक व्यक्ति के आगे और पीछे लगे हुए चौकीदार हैं जो अल्लाह के आदेशानुसार उसकी रक्षा करते हैं। (सूरः अर्रअ़द–11)*

फिर वह निकटतम लोगों से अधिक निकट तथा ऐकताओं से अधिक ऐकता है, वह मनुष्य से उसके गर्दन की नस से अधिक निकट है और मरने वाले से उसके परिचायकों से अधिक निकट है।

अनुवादः *"और हम तो मनुष्य की गर्दन की नस से भी अधिक निकट हैं। (सूरः काफ़–16)*

अनुवादः *"उस समय तुम से भी अधिक मरने वाले से हम निकट होते हैं परन्तु देख नहीं सकते। (सूरः अल–वाक़िअह–85)*

वह हर व्यक्ति की प्रार्थना व विनती को हर समय व हर स्थान पर सुनता है, उसके और बन्दे के बीच कोई दीवार और आड़ नहीं, और न उसके यहां मुद्दे को स्पष्ट करने के लिए किसी साधन व शिफ़ारिश की आवश्यकता है।

अनुवादः *"और जब तुम से मेरे बंदे मुझ को पूछें तो मैं तो निकट ही हूं जब दुआ मांगने वाला मुझ से दुआ मांगता है तो मैं स्वीकार करता हूं, तो उन्हें मेरा आदेश मानना चाहिए और मुझ पर ईमान लाना चाहिए ताकि सत्यमार्ग पर आएं।*

(सूरः अल् बकरह–168)

उसका प्यार व स्नेह असीमित है, माता–पिता का प्यार केवल उसके पालनहार होने तथा करुणा का एक चमत्कार तथा एक छोटा सा नमूना है।

फिर वह सदैव जीवित और जागरूक है, क्योंकि वह धरती आकाश को संभाले हुए है, अतः उसके यहां

किसी समय असावधानी व भूल नहीं।

अनुवादः *"अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना (बन्दगी) के योग्य नहीं वही हमेशा जीवित रहने वाला है, कायम व स्थापित है। सबको थामने वाला है, उसको कभी भी ऊँघ व नींद नहीं आ सकती।*

(सूरः अल–बकरह–255)

इसके विरुद्ध उन्होंने अल्लाह की समस्त सृष्टि के लिए वह सारे गुण सिद्ध किये जो उन ईश्वरीय गुणों के विरुद्ध हुए हैं, जिनका समूह गुलामी, असहायता व दुर्बलता तथा असमर्थता है।

अनुवादः *"उसी को पुकारना सत्य है, जिनको यह लोग अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हैं वे उनके कुछ भी काम नहीं आते, जैसे कोई प्यासा आदमी अपनी दोनों हथेलियां फैला कर पानी से कहे कि उसके मुंह में आ जाए जब कि पानी कभी भी उसके मुंह में नहीं पहुंच सकता, इसी प्रकार इंकार करने वालों की दुआ व प्रार्थना का कुछ भी प्रभाव नहीं। (सूरः अर्रअद–18)*

अनुवादः *"ऐ लोगो! एक उदाहरण दिया जाता है ध्यान से सुनो, अल्लाह के अतिरिक्त जिनको तुम पूजते हो एक मक्खी भी नहीं पैदा कर सकते, यदि सब एकत्र हो कर पैदा करना चाहें तो भी नहीं कर सकते और यदि मक्खी उनसे कोई चीज़ छीन झपट कर ले जाए तो उससे छुड़ा भी नहीं सकते, जिसने अपनी दुआ व प्रार्थना में ऐसे को तलब किया जो स्वयं बहुत कमज़ोर, बेबस हैं और जिससे दुआ की वह भी बेचारा बेबस, अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारने वालों ने अल्लाह की कदर नहीं समझी जैसी क़दर का उसे अधिकार है। निः संदेह अल्लाह तआला शकितमान व जबरदस्त है। (सूरः अल्हज्ज–73)*

अनुवादः *"जिन लोगों ने अल्लाह को छोड़ कर दूसरों को समर्थक बना लिया है, उनकी मिसाल मकड़ी जैसी है, जिसने अपना एक घर बनाया यह सच है कि सब घरों में कमज़ोर घर मकड़ी का घर होता है, क्या ही अच्छा होता कि वे (इस वास्तकिवकता को) जानते। (सूरः अंकबूत–41)*

अनुवादः *"यही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है उसी की राज सत्ता है, जिनको तुम अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हो उनको तो खजूर की गुठली के छिलके के बराबर भी अधिकार प्राप्त नहीं। यदि तुम उनको पुकारते हो तो वे तुम्हारी पुकार सुनते ही नहीं और यदि सुन लें तो तुम्हारे कुछ काम न आएं और क़यामत के दिन तुम्हारे साझी बनाने के कार्य को भी नकार देंगे, और हर प्रकार की ख़बर रखने वाले (अल्लाह) की तरह दूसरा कोई तुम को घटना की सूचना, नहीं दे सकता। ऐ लोगो! तुम लोग अल्लाह के मोहताज हो और केवल वही बेपरवाह है तथा हर प्रकार की प्रशंसा का पात्र है। (सूरः फातिर–13–15)*

अनुवादः *"मुश्रिकों (बहुदेववादियों) ने अल्लाह के अतिरिक्त ऐसे उपास्य (मअ़बूद) बनाए जो किसी वस्तु को पैदा नहीं कर सकते और अपने ही लिए किसी लाभ व हानि का अधिकार नहीं रखते और उनको जीवन मृत्यु और मर कर दुबारा जीवित होने का भी अधिकार नहीं। (सूरः अल्फुर्कान–3)*

..... **जारी**.....

❖❖❖

आदर्श शासक

—अतहर हुसैन

राज नीति के इस युग में शासन की गद्दी पर विराजमान होने के लिए जो यत्न अचानक किये जाते हैं उनसे कौन अपरिचित होगा? किसी ऊँचे पद के लिए किस प्रकार जोड़—तोड़ की जाती है और किस प्रकार धन—सम्पत्ति को पानी की तरह बहाया जाता है यह भी कोई ढकी—छिपी बात नहीं है। अकस्मात् यह प्रश्न उठता है कि मनुष्य, अधिकार की प्राप्ति के लिए, इतना उत्सुक क्यों है? राजगद्दी को सुशोभित करने के लिए प्रयत्नशील क्यों है? और अधिकार प्राप्त से उसका उद्देश्य क्या है? कहने को तो इस मार्ग पर चलने वाले का एक मात्र यही उत्तर होगा कि देश तथा जनता की सेवा। परन्तु, इस कथन में कितनी वास्तविकता है, इन वाक्यों के पीछे किस प्रकार की आकांक्षाएं तथा कामनाएं निहित हैं, इसका सामान्य जनता को भली—भांति अनुभव है। वर्षों का अनुभव यही बताता है कि वास्तव में जन—सेवा और लोकहित के पर्दे में मान—मार्यादा, नाम—नमूद, एश्वर्य और आधिपत्य की आकांक्षाएं ही विराजमान होती हैं और अवसर प्राप्त होते ही अपने वास्तविक रूप में विद्यमान हो जाती हैं।

देश की वर्तमान परिस्थिति को देख कर एक प्रकार की घुटन सी महसूस होती है। हम खुली आंखों से देखते हैं कि जनमत से निर्वाचित होने के बाद मनुष्य किस प्रकार अपने वचनों से मुकर जाता है और अधिकार प्राप्त होते ही जनता के दु:ख दर्द को कितनी आसानी से भुला देता है। क्या प्रत्येक युग में ऐसा ही होता आया है? क्या राजगद्दी पर विराजमान होते ही मनुष्य में कोई परिवर्तन आ जाता है? क्या कोमल हृदय रखने वाले, जन साधारण के दु:ख—दर्द पर आंसू बहा देने वाले और उनकी दयनीय दशा पर व्याकुल हो जाने वाले मनुष्य का हृदय, अधिकार प्राप्ति के बाद बदल जाना स्वाभाविक है? परन्तु आज से चौदह सौ वर्ष पूर्व अरब के मुसलमान—शासकों का जीवन—चरित्र इस प्रश्न का खंडन करता है और इस बात की पुष्टि करता है कि मनुष्य के सामने यदि इस जीवन के पश्चात किसी पूछ—ताछ का भय हो और सर्वशक्तिमान अल्लाह तआला के सामने पेश हो कर अपने कर्मो की जवाबदेही का विश्वास हृदय में विद्यमान हो तो शासन के उत्तरदायित्व को पूरा करने के लिए राजगद्दी, पुष्पों की शय्या नहीं अपितु, कांटों की सेज है। हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सच्चे उत्तराधिकारियों ने यह दिखला दिया कि शासन—प्रबन्ध का उत्तरदायित्व डाल दिए जाने पर उसको पूरा करने के लिए कैसा कठोर जीवन बिताना पड़ता है और जनता की सुख शांति के लिए कैसे बलिदान की आवश्यकता है।

हमारा शासक वर्ग और आम जनता यदि इन महानुभावों के आदर्श को सामने रख लोक हित तथा जनसेवा का इरादा करे तो एक ओर राजनीति की जोड़ तोड़ में कमी हो जायेगी और दूसरी ओर देश ऐसे निःस्वार्थ तथा सच्चे जन सेवकों से लाभ उठायेगा जिनकी इस युग में अति आवश्यकता है।

जनता के सम्मुख एक आदर्श शासक के जीवन की कुछ झलकियां प्रस्तुत करने के उद्दश्य से उर्दू के प्रसिद्ध भाषा में "मिसाली हुकमरां" नाम की पुस्तक सम्पादित की है। पुस्तक को पढ़ कर मेरी इच्छा हुई कि यदि इसका हिन्दी में अनुवाद कर दिया जाये तो देश की बड़ी संख्या को इससे लाभ उठाने का अवसर प्राप्त होगा। अतः इस इच्छा की पूर्ति में "आदर्श शासक" नामक पुस्तक आपके सम्मुख प्रस्तुत है। आशा है कि पाठक जन इससे लाभ उठायेंगे और अनुवाद में किसी प्रकार की त्रुटि के लिए मुझे क्षमा करेंगे

❖❖❖

कुर्आन की शिक्षा..............

कहा कि कोई न भी गया तो मैं अकेले जाऊँगा लेकिन मात्र एलान ही से जान दे देने वालों का एक दल तैयार हो गया।

4. जिसने जिहाद के लिए शौक पैदा किया उसके लिए बदला है और जिसने रोका उस पर विपत्ति है।

5. सलाम का उल्लेख है मगर जो सलाम करे उतना ही जवाब दे या "व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु" भी बढ़ा दे।

6. यह खुले हुए मुनाफ़िकों के बारे में कहा जा रहा है मुसलमानों में से कुछ लोग कहते थे कि अगर यह आते हैं तो अपनों ही की तरह इन से व्यवहार किया जाए, शायद यह ईमान ले आएं, अधिकतर लोगों का यह कहना था कि इनसे अलग ही रहना बेहतर है, अल्लाह कहता है कि हिदायत अल्लाह के हाथ में है तुम उनके साथ वह व्यवहार करो जो आगे बयान किया जा रहा है।

7. यह मुनाफ़िक़ लोग कुफ़्र पर ऐसे जमे हुए हैं कि खुद तो इस्लाम क्या स्वीकार रकेंगे वे तो चाहते हैं कि तुम भी कुफ़्र कर के उन्हीं जैसे हो जाओ, तो तुम्हें चाहिए कि जब तक वे इस्लाम स्वीकार करके अपना वतन छोड़ कर चले न आएं उनको दोस्त न बनाओ और पूरी तरह अलग रहो और अगर वे ईमान और हिज़रत को स्वीकार नहीं करते तो उनको क़त्ल करो इसलिए कि वे अपने आप को मुसलमान बताते हैं और भीतर से मुसलमानों की जड़ें काटते हैं, विद्रोहियों की सज़ा क़त्ल ही है।

8. अगर उन्होंने ऐसे कबीलों से सुलह कर ली जिनसे तुम्हारी सुलह है तो वे भी तुम्हारी सुलह में शामिल हो गए पर खुद अगर तुम से सुलह कर लें और कहें कि न हम अपनी क़ौम का पक्षधर हो कर तुम से लड़ेंगे और न तुम्हारे पक्षधर हो कर अपनी क़ौम से लड़ेंगे तो उनकी सुलह स्वीकार कर लो, फिर आगे कहा जा रहा है कि उनमें वे लोग भी हैं जो सुलह करने के बाद फिर पलट जाते हैं तो उनकी रिआयत मत करना।

◆◇◆

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

जज़्ब-ए-ईसार व हमदर्दी

—मौलाना सय्यिद अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह0

ईसार का मतलब यह होता है कि दो आदमी हों, जिन को सिकी चीज़ की बराबर बराबर ज़रूरत है, दोनों एक ही चीज़ चाहते हों, ऐसे में इनमें से एक दूसरे के लिए उसको पेश करे और दूसरा पहले को पेश करे, इस तरह यह दोनों एक दूसरे के लिए ईसार करने वाले कहे जाऐंगे, ईसार के मुक़ाबले में खुदगर्ज़ी है, खुदगर्ज़ी की तारीफ (परिभाषा) यह है कि इनसान के पेशे नज़र (सामने) सिर्फ अपना मतलब हो, अपना फायदा हो, अपनी राहत हो, अपना आराम हो।

मुवासात व ग़मख़ारी की तारीफ यह है कि किसी को किसी चीज़ की ज़रूरत है, आप उसकी मदद करते हैं, और आप को किसी क़िस्म की कोई परेशानी भी नहीं होगी, तो आप उस का तआवुन (सहायता) करें, उसकी मदद करें, और राहत व आराम पहुंचाने की कोशिश करें, इस का मतलब यह होगा कि गोया आपने उसका ग़म दूर कर दिया, रंज खत्म कर दिया, परेशानी हलकी कर दी, और उसको आपने अपने एक मामूली अमल से राहत पहुंचा दी, वाक़िया यह है कि यह ऐसा काम है जो अल्लाह को बहुत पंसद आता है, क्योंकि सब से अच्छा इन्सान वह है जो अपने दूसरे भाईयों के साथ नफे का बरताव करे, नफा पहुंचाने की कोशिश करे, हदीस शरीफ में है:

"सबसे बेहतर शख़्स वह है जो लोगों को नफ़ा पहुंचाए"।

मालूम हुआ सबसे बेहतर शख़्स वह है जो नाफे (दूसरों को फायदा पहुंचाने वाला) बन कर रहे, हकीकत यह है कि जो ईसार व ग़मख़ारी (हमदर्दी करने वाला व परेशानी को दूर करने वाला) होता है वह नाफे (लाभ पहुंचाने वाला) बन कर ही ज़िन्दा रहता है, लेकिन जो खुदगर्ज़ (अपने आप को फायदा पहुंचाने वाला) होता है, राहत चाहने वाला होता है, हर चीज़ में उस के पेशे नज़र सिर्फ अपना नफ़्स होता है, असल में वह अपने आप को ही नुक़सान पहुंचाने वाला होता है, आम तौर से आदमी यही चाहता है कि हर शख़्स की नज़र में महबूब (प्यारा) बन जाए, लेकिन इस के लिए कुछ आदाब हैं जिन का लिहाज़ रखना पड़ता है, सब से बड़ा अदब यह है कि इन्सान जो कुछ लोगों के हाथ में है उस से नज़र फेर ले, किसी की चीज़ पर ललचाई नज़र न डाले, तो वह सब का महबूब (प्यारा) बन जाएगा, और अगर दुन्या से बेरग़बती (दूरी) अपना ले, तो अल्लाह की नज़र में महबूब बन जाएगा, इसी तरह यह भी है कि आप को भी इसी वक़्त खाने की ज़रूरत है, जिस वक़्त दूसरे शख़्स को है, ऐसे मौक़े पर आपने दूसरे को तरजीह दी कि आप दस्तर खान पर आप पहले बैठ जाइये, ज़रा सी देर में मुझे कोई फर्क़ नहीं

पड़ेगा, तो आप अपने इस अमल से उसके महबूब बन जाऐंगे, जिस की बुन्याद पर वह शख़्स बहर हाल आपको अच्छी नज़रों से देखेगा कि इस शख़्स ने हमारे साथ अच्छा सुलूक किया था।

ख़ास तौर से दो चीज़ें ऐसी हैं जिन में हर इन्सान की हमदर्दी का अंदाज़ा हो जाता है। एक खाना, और दूसरे खाने के बाद फराग़त (इस्तिनजा करने में) आम तौर से इन दोनों चीज़ों में हर शख़्स को जल्दी होती है, जो इन्सान की फितरत (स्वभाव) में दाखिल है, इन दोनों का तक़ाज़ा हर शख़्स को अपने पूरे शबाब (पूरे जोश) के साथ जाहिर होता है खाने में दो बातें होती हैं, एक तो यह कि आदमी पहले खाना चाहता है, दूसरे यह कि जब वह दस्तर खान पर बैठ जाता है तो जो अच्छी चीज़ें हैं वह अपने लिए समेट लेना चाहता है, यह बात तक़रीबन सौ प्रतिशत लोगों में पाई जाती है, इससे कोई शख़्स खाली नहीं, हाँ! अब अगर किसी के अन्दर हमदर्दी है तो वह अपने भाई के लिए अच्छी चीज़ें छोड़ देगा, उसको पहले बिठाएगा, इसी तरह मामला फराग़त का भी है, यानी इस्तिनजे का, की आप को भी ज़रूरत है और आपके सामने वाले शख़्स को भी, इस में जो शख़्स अपने आप को रोक सकता है उस को चाहिए कि अपने भाई को तरजीह देने की कोशिश करे, हमदर्दी से काम ले, क्योंकि आप के रुक जाने से दूसरे को राहत पहुंचेगी, हक़ीक़त यह है कि इन्सान को सब से ज़ियादा राहत इसी मौक़े पर किसी के हक़ में हमदर्दी का जज़्बा ज़ाहिर करने से होती है, कभी कभी ऐसे लोग होते हैं जो परेशान हाल और बीमार होते हैं, उन से पेशाब नहीं रुकता, या उनको इस्तिनजे का तक़ाजा इतनी ज़ोर से होता है कि वह खुद को रोक नहीं सकते, अब अगर आप ने तरजीह (आगे जाने की इजाज़त) नहीं दी, और आप अपने आपको रोकने पर कुदरत रखने के बावजूद सिर्फ इस वजह से ऐसे शख़्स को नज़र अंदाज़ (अंदेखा) कर गए कि मैं पहले चला जाऊँ, इस का नतीजा यह होगा कि उस बीमार शख़्स का पाजामा ख़राब हो जाएगा, और इस का मतलब होगा कि एक मामूली चीज़ का लिहाज़ न रखने के नतीजे में उस शख़्स की तकलीफ का ज़रिया आप बन गए, हालांकि आप इस की राहत का ज़रिया बन सकते थे, इसलिए इस सिलसिले में भी हमदर्दी से काम लेना ज़रूरी है, किसी भी इजतिमाई माहौल (सामूहिक स्वभाव) में यह सब बातें बहुत जल्द समझ में आ जाती हैं, इस पर अमल करना भी आसान होता है।

हज़रत मुजद्दिद अल्फसानी रह0 ने अपनी किताबों में लिखा है कि खाने में ईसार करने से जितनी रूहानी तरक्क़ी होती है वह कम चीज़ों से होती है, क्योंकि दस्तर खान पर नक़द मामला होता है, सामने सिर्फ दो बोटियां रखी हैं, जी चाहता है कि दोनों हमारे हाथ में आ जाऐं, यही वजह है कि कुछ लोग इस तरह खाते हैं कि पूरी बोटी मुंह में रख लें, फिर दूसरी बोटी में अपने भाई को शरीक कर लें,

असल में ऐसे मौक़ों पर अपने हाथ को रोकना और अपने भाई को आगे कर देना बहुत मुश्किल काम है, लेकिन यह भी अल्लाह तआला का उसूल है कि मुश्किल काम पर ही नवाज़ा जाता है।

सहाबा–ए–किराम रज़ि0 का वाक़िया रिवायत में आता है कि मैदान–ए–जंग में एक ज़ख़्मी पड़ा हुआ है, एक शख़्स अपने प्यासे जख़्मी चचा को पानी पिलाने आता है, तो दूसरे शख़्स की प्यास का इल्म हो जाता है, यह आदमी ऐसी हालत में अपनी प्यास पर उनको तरजीह देते हैं, हुक्म करते हैं कि पहले पानी उनको दो, सहाबा रज़ि0 का ऐसी हालत में हमदर्दी का यह सिलसिला एक के बाद दूसरे और तीसरे तक ऐसे जुड़ता चला जाता है कि हर शख़्स बग़ैर पानी पिये ही इस दुन्या से चला जाता है, अल्लाहु अकबर! यही वह ईसार है जिस का इस्लाम में मुतालबा किया गया है, खुदग़र्ज़ी (स्वार्थ) की इस दुन्या में अगर हम यह कोशिश करें कि हर शख़्स को हमारी ज़ात से फायदा पहुंचे, हमारे ज़रिये से हर एक को राहत व नफ़ा पहुंचे तो हमदर्दी का माहौल क़ायम हो जाए, एक दूसरे से मुहब्बत पैदा हो जाए, वरना होता यह है कि हर आदमी चाहता है कि सब से पहले और सब से ज़ियादा मुझे मिल जाए, इस की ख़ातिर कभी कभी एक दूसरे को धक्का भी दे देता है, यह नहीं देखता कि पास में कौन है, बूढ़ा है, बच्चा है, जवान है जब कि यह काम हमदर्दी के खिलाफ़ है।

हमदर्दी और ग़म को दूर करना बहुत ही अनोखी चीज़ है, अल्लाह की नज़दीकी को हासिल करने के लिए बहुत ही मुअस्सिर व अकसीर (प्रभावी व फायदेमन्द) नुस्खा है, उम्दा नुस्खा है, जो इस को इख़्तियार करेगा, उसकी तरक़्क़ी की कोई इन्तिहा नहीं, आज कल हम लोग इन्हीं छोटी छोटी चीज़ों में फंस जाते हैं, जो हमारे लिए रुहानी तरक़्क़ी के मवाने (रुकावटें) बन जाती हैं, बड़े लोगों की यही बात है कि वह इन तमाम छोटी चीज़ों को भी देखते हैं, जो रुहानियत पर असर अंदाज़ होने वाली हों, बात यह होती है कि जो बड़े लोग होते हैं उनके पास ज़ियादा रौशनी होती है, तो उनको छोटी चीज़ें भी नज़र आ जाती हैं, और जो छोटे लोग होते हैं उनका बल्ब फ्यूज़ होता है, उनके पास मामूली दर्जे की रोशनी होती है, इसलिए इनको बड़ी चीज़ें नज़र नहीं आतीं, लिहाज़ा जो बड़ा बनना चाहे उसके लिए ज़रूरी है कि वह छोटी चीज़ों को करने का काम करे, तो वह बड़ा बन जायेगा, और अगर बड़ी चीज़ों को करने का काम नहीं करेगा तो बड़ा बनना मुश्किल होगा, क्योंकि छोटे लोग बड़ी चीज़ों का भी एहतिमाम नहीं करते और जो बड़े लोग होते हैं वह छोटी चीज़ों को करने का काम भी करते हैं, हमदर्दी में यही बुन्यादी बात है कि इस सिलसिले में यह नहीं देखा जाएगा कि खाने का एक लुक़मा ही तो है, इसमें हमदर्दी करने से क्या फायदा? याद रहे! बज़ाहिर यह एक लुक़मा है मगर यह लुक़मा फरिश्ता देख रहा है

शेष पृष्ठ...24 पर

इस्लाम की महिलाएं और दीन की सेवाएं

—मौलाना सय्यिद मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी

—हिन्दी इम्लाः हुसैन अहमद

यह बड़े शुक्र की बात है कि वर्तमान युग में इस्लाम की सेवा में मुस्लिम महिलाएं भी बढ़—चढ़ कर भाग ले रही हैं और अपनी संतान तथा दूसरी बहनों को इस्लाम की ओर आकृष्ट कर रही हैं और बुरी बातों, बे दीनी और मानवता विरोधी पाश्चात सभ्यता से बचाने का प्रयास कर रही हैं।

अब तक कुछ भूल चूक से इस्लाम की सेवा का काम मर्दों के साथ मख्सूस हो गया था, जिस के कारण दीन की सेवा, सुधार तथा प्रशिक्षण में बाधा कर रहीं थीं, इस्लाम की सेवा का यह महत्वपूर्ण कर्तव्य प्रभावित हो रहा था और इस दीनी कार्य में वह तीव्रता बाक़ी नहीं रह गई थी जो आरम्भ की शताब्दियों में थी।

इस्लामिक इतिहास का अध्ययन किया जाए तो यह बात खुल कर सामने आती है कि आरम्भिक शताब्दियों में मुसिलम महिलाएं इस्लाम की सेवा में पूर्णतः भाग लेती थीं सहा—बए—किराम के साथ सहाबियात भी दीन और दीन के ज्ञान के कामों में व्यस्त रहती थीं, यहां तक कि जिहाद में शरीक होती थीं, और वहां जो सेवाएं उनके योग्य होतीं उन को पूरा करती थीं, घायलों को पानी पिलाना, मरहम पट्टी करना, मुजाहिदीन की मदद करना, उनका मुख्य कार्य होता था।

आम हालात में अहादीस (नबी की बातें) की रिवायत करना (बयान करना) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जो कुछ उन्होंने सुना, उसको दूसरों तक (विशेष कर महिलाओं तक) पहुंचाना अपना दीनी फरीज़ा समझती थीं, सहाबियात काल के पश्चात के ज़माने में भी महिलाओं में ऐसी महिलाओं ने जन्म लिया है जिन्होंने मुहद्दसीन से हदीस का ज्ञान लिया और उसमें ऐसी कुशलता प्राप्त की कि बड़े बड़े विद्वान, हदीस का ज्ञान सीखने के लिए उनकी सेवा में उपस्थित हुआ करते थे इस प्रकार हज़ारों हदीसें उन महिलाओं द्वारा संसार में फैलीं और उन का हर ओर प्रसारण हुआ।

लेकिन बड़े खेद की बात यह हुई कि कई शताब्दियां ऐसी गुजरीं जिन में महिलाओं ने दीन का ज्ञान प्राप्त करने में और उसके प्रसारण में वह परिश्रम नहीं दिखाया जो आरम्भ की शताब्दियों में था परिणाम स्वरूत हदीस के ज्ञान में और दूसरे लाभदायक ज्ञान में उनका भाग घटते—घटते न के बराबर हो गया, उसके कारण उम्मत को बड़ी हानि पहुंची एक हानि तो यह पहुंची कि दीन का ज्ञान मर्दों में सीमित हो गया, दूसरी हानि यह हुई कि उम्मत का आधा भाग दीन के ज्ञान की सेवा से वंचित रह गया।

हमारी बहनों को अब मुख्य रूप से कुर्आन व हदीस, व दीन का ज्ञान और दूसरे लाभदायक ज्ञान जो महिलाओं के लिए उचित हों सीखने और उनके प्रसारण करने में भाग लेना चाहिए और सहाबियात की तरह दीन की सेवा में उसी तरह भाग लेना चाहिए जिस तरह वह अपने काल में दीन की सेवाओं में भाग लिया करती थीं। ◆◇◆

प्यारे नबी की प्यारी.....

और वह दोज़ख में डाल दिया जायेगा फिर मालदारों को बुलाया जायेगा, उनके सामने दौलत पेश की जायेगी, वह उसका इकरार करेंगे, फिर पूछा जायेगा कि इस माल को कहां खर्च किया, वह कहेंगे परवरदिगार मैंने यह माल तेरी खुशी के लिए तेरी राह में खर्च किया, अल्लाह तआला फरमायेगा तुम झूठे हो, तुम ने माल उसी जगह खर्च किया जहां तुम्हारी ख्वाहिश थी और दानी प्रसिद्ध होने की संभावना थी सो तुम दानी प्रसिद्ध हो गये, तुम्हारा मतलब पूरा हो गया, फिर उसको चेहरे के बल घसीट कर दोज़ख में डालने का आदेश हो जायेगा (मुस्लिम)

–प्रस्तुति– ◆◇◆

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

जज़्ब-ए-ईसार.....

कि आप किस नियत से इस को मुंह में डाल रहे हैं, इस वक़्त आप की नियत यह होती है कि मेरे अपने भाई को न मिलने पाए, जल्दी से मैं अपने मुंह में रख लूं, चाहे पेट में जा कर यह लुक़मा नुक़सान ही क्यों न करे, इसीलिए जब आदमी सब के साथ दस्तरखान पर बैठ कर खाना खाता है तो ज़ियादा खा लेता है, अकेला खाये तो कम खाएगा, इसलिए कि वह यह समझता है कि यहां सारा खाना मेरा है, मैं इत्मीनान से खाऊँगा, लेकिन जब सब के साथ दस्तरखान पर बैठ कर खाता है तो उसको यह डर लगा रहता है कि कहीं यह मुझ से ज़ियादा न खा ले, इसलिए जल्दी जल्दी खाता है, हालांकि अगर सब के साथ दस्तरखान के आदाब का लिहाज़ रख कर आदमी खाये तो ऐसी रूहानी तरक़्क़ी होती है जिसका ख़्याल करना भी मुश्किल है, हज़रत मुजद्दिद अल्फसानी रह0 ने यह बात यूं ही नहीं लिखी है कि इस से जितनी तरक़्क़ी होती है वह और किसी चीज़ से कम होती है, इसलिए इस की मश्क़ (अभ्यास) भी हमारे इजतिमाई माहौल (आपसी रहन सहन) में होनी चाहिए कि हम हर चीज़ में एक दूसरे को तरजीह दें, (आगे बढ़ायें) इससे दूसरे को राहत मिल जाएगी, वरना ज़रा सी दो मिनट की देर होने की वजह से एक का दिल मैला हो जाएगा, किसी का दिल टूट गया, मैला हो गया, किसी को परेशानी हो गई, कोई तकलीफ़ में मुबतला हो गया और आप को ज़रा सी राहत मिली, इस से कोई फायदा नहीं, अलबत्ता रूहानी ऐतबार से पस्त ज़रूर होगा, इसीलिए रूहानियत को तरक़्क़ी देने में इन चीज़ों का खास ख़्याल रखना चाहिए यानी ज़बान भी मीठी होनी चाहिए, कड़वी ज़बान न हो, हर शख़्स के लिए अच्छी ज़बान इस्तेमाल करें, अगर कोई बात कहनी है तो अच्छे अंदाज़ में कहें, यह सब हमदर्दी में शामिल है, और यह एक ग़ैर मामूली (असाधारण) चीज़ है।

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः अल्लाह के नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में क्या अक़ीदे रखने चाहिएं?

उत्तरः आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के बन्दे एक इंसान और अल्लाह के रसूल हैं अल्लाह तआ़ला के बाद तमाम मखलूक़ में आप सबसे अफज़ल (सर्वश्रेष्ठ) हैं आप मआ़सूम हैं आप पर अल्लाह तआला ने कुर्आने मजीद उतारा। आप को अल्लाह तआ़ला ने एक रात आसमानों पर बुलाया और जन्नत और जहन्नम का मन्ज़र दिखाया, आप ने अल्लाह तआ़ला के हुक्म से बहुत से मुअ़जिज़े (चमत्कार) दिखाए, आप अल्लाह तआला की बहुत ज़ियादा इबादत करते थे, आप के अख़्लाक़ (आचरण) बहुत ही आला (उच्च) दरजे के थे। आप को अल्लाह तआला ने गुज़री हुई और आने वाली बहुत सी बातों का इल्म अता फरमाया था। उन बातों को आप ने अपनी उम्मत को बताया था, आप को अल्लाह तआ़ला ने तमाम मख़्लूक़ से ज़ियादा इल्म अता फरमाया था। लेकिन आप आलिमुल ग़ैब (परोक्ष के ज्ञानी नहीं थे) आप ग़ैब की वही बातें जानते थे जिनको अल्लाह तआला ने आपको बताया था। आलिमुलग़ैब होना तो अल्लाह की सिफत है। आप खातिमुन्नबिय्यीन हैं कि आपके बाद कोई नया नबी नहीं होगा। हां सिर्फ हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जो पहले जमाने के पैगम्बर हैं आसमान से उतरेंगे और इस्लामी शरीअत की पैरवी करेंगे। आप इंसानों और जिन्नात सबके लिए रसूल हैं। आप सारे आलम के लिए और क़ियामत तक के लिए सारे जिनों और इन्सानों के लिए रसूल हैं। आप कियामत के दिन अल्लाह तआला की इजाज़त से गुनहगारों की शफाअत (अनुशंसा) करेंगे। अल्लाह तआला नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शफाअ़त कबूल फरमायेगा। आपने जिन बातों का हुक्म दिया है उन पर अमल करना और जिन बातों से रोका है उनसे रुक जाना और गुजरे हुए और आने वाले जिन वाक़ियात की खबर दी है उनको उसी तरह मानना और यक़ीन करना उम्मत पर जरूरी है यानि आपकी इताअत करना और आप की हर बात मानना उम्मत पर फर्ज़ है, आपसे महब्बत रखना और आपकी ताजीम करना हर उम्ती पर फर्ज़ है। मगर ताजीम शरीअ़त के हुदूद में हो

प्रश्नः मासूम होने से क्या मुराद है?

उत्तरः मासूम होने से मुराद है कि जो मासूम हो उससे सग़ीरा और कबीरा (छोटा बड़ा) कोई गुनाह न हो, हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मासूम थे उनसे कस्दन या सहवन (जानबूझ कर या भूले से) कोई न सगीरा गुनाह हुआ न कबीरा, तमाम अम्बिया अलैहिमुस्सलाम मासूम थे।

प्रश्न: अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मेअ़राज जिस्मानी थी या मनामी (शरीर के साथ थी या स्वप्न में)?

उत्तर: अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने जिस्म के साथ मेराज में (आसमानों पर) तशरीफ ले गये थे, इसलिए आप की मेअ़राज जिस्मानी थी हां इस जिस्मानी मेअ़राज के अलावा चन्द बार ख्वाब में भी मेअ़राज हुई है वह मनामी मेअ़राजें कहलाती हैं लेकिन याद रहे कि अम्बिया अलैहिस्सलाम के ख्वाब भी सच्चे होते हैं, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक मेअ़राज जिस्मानी हुई और चार या पाँच मेअ़राजें मनामी हुई हैं।

प्रश्न: शफाअ़त (अनुशंसा) से क्या मुराद है?

उत्तर: शफाअ़त सिफारिश को कहते हैं। कि़यामत के दिन अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह तआला के सामने जिन गुनहगार बन्दों की सिफारिश करेंगे उनको मुआफी दे दी जायेगी अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शफाअत करने की फज़ीलत अता हो चुकी है लेकिन फिर भी अल्लाह तआला के जलाल व जबरूत (तेज व तप) के अदब में आप भी अल्लाह तआला से शफाअ़त की इजाज़त मांगेगे और इजाज़त मिलने पर शफाअ़त फरमाएंगे।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अलावा दूसरे अम्बिया, शुहदा और औलिया भी अल्लाह की इजाज़त से गुनहगारों की शफाअ़त करेंगे लेकिन बिला इजाज़त कोई शफाअ़त न कर सकेगा।

प्रश्न: किस किस्म के गुनाहों की मुआ़फी की सिफारिश हो सकेगी?

उत्तर: शिर्क और कुफ्र के सिवा तमाम गुनाहों की मुआ़फी की सिफारिश हो सकेगी।

प्रश्न: इबादत के क्या मअ़ना (अर्थ) हैं?

उत्तर: इबादत बन्दगी को कहते हैं जो बन्दगी करे उसे आबिद और जिसकी बन्दगी की जाय उसे मअ़बूद कहते हैं इबादत को हिन्दी में उपासना कहते हैं और आबिद को उपासक तथा मअ़बूद को उपास्य कहते हैं। हमारा सबका सच्चा और हक़ीक़ी मअ़बूद (उपास्य) वही एक अल्लाह है, जिसने हम सबको और सारी दुन्या को पैदा किया है और हम सब उसके बन्दे हैं, उसने हम सबको अपनी इबादत का हुक्म दिया है इसलिए हम सब पर अल्लाह की इबादत करना फर्ज़ है।

प्रश्न: अल्लाह तआ़ला ने अपनी मख़लूक़ में किस किस को इबादत का हुक्म दिया?

उत्तर: आदमियों और जिनों को इबादत करने का हुक्म दिया गया है।

प्रश्न: जिन कौन हैं?

उत्तर: जिन भी अल्लाह तआ़ला की एक बड़ी मख़लूक़ हैं जो आग से पैदा किये गये हैं जिनों के जिस्म ऐसे लतीफ़ हैं (पारदर्शी) हैं कि हम को नज़र नहीं आते लेकिन उनको अल्लाह तआ़ला ने यह सलाहीयत (योग्यता) दी है कि वह किसी जानवर या इन्सान की शक्ल में आ सकते हैं उस वक़्त वह हमको नज़र आते हैं उनमें मर्द भी हैं और औरतें भी और उनसे औलाद भी होती है।

शेष पृष्ठ...35 पर

–पिछले अंक से आगे

नमाज़ की हक़ीक़त व अहम्मीयत

–मौलाना मुहम्मद मंजूर नोमानी रह0

–हिन्दी लिपिः हुसैन अहमद

जुम्ला हालाते ज़िन्दगी पर नमाज़ का अहाताः–

इन्सान अपनी पूरी ज़िन्दगी में जिन जिन हालात में रहता है, मसलन खड़ा होना, बैठना, झुकना, लेटना, एक हालत से दूसरी हालत की तरफ मुन्तकिल और मुतहर्रिक होना, (यही इंसान की वह चन्द हालतें हैं जिन में आम तौर से उस की ज़िन्दगी गुज़रती है) तो नमाज़ में इन तमाम हालात को जमा कर दिया गया है और हर हाल में अल्लाह की याद और उस की अज़मत व किबरियाई के ध्यान और उस की इताअत व बन्दगी की मश्क ऐसे अन्दाज़ से और ऐसी तरतीब के साथ कराई जाती है कि अगर यह शऊर व हुज़ूर के साथ हो (जैसा कि चाहिए) तो नमाज़ के अलावा दूसरे अवक़ात में भी जब आदमी इन हालात में हो (यानी खड़ा हो, बैठा हो, झुका हो, लेटा हो, चल फिर रहा हो, या एक हाल से दूसरे हाल की तरफ मुनतकिल हो रहा हो) तो अल्लाह की याद और उसके ध्यान और उसके अहकाम की इताअत से गाफिल और खालियुज़्ज़िहन न रहे।

अलग़रज़ हर हाल में, अल्लाह की याद और उसकी इताअत व बन्दगी के एहसास को करने और जिन्दगी को उसी के मुताबिक चलाने में नमाज़ की तासीर का एक खास पहलू यह भी है गोया इस तौर पर नमाज़ ही से दवाम जिक्र वाली वह जिन्दगी भी वजूद में आती है जिस का जिक्र कुर्आन मजीद की इस आयत में किया गया है, अनुवादः "वह बन्दे जो अल्लाह की याद करते और उसको याद रखते हैं खड़े हुए और बैठे हुए और करवटों पर लेटे हुए भी।"

(आल इमरामः190)

जुम्ला अहकामे शरीअ़त को नमाज़ की जामईयतः–

फिर इसी तरह एक खुसूसीयत नमाज़ की यह भी है कि इस में दीन के तमाम मुसबत और मन्फी अहकाम (जुम्ला अवामिर व नवाही) को जमा कर दिया गया है, गोया जिस तरह सूर–रए–फातिहा के मुतअ़ल्लिक़ कहा जाता है कि वह बिल–इजमाल तमाम कुर्आनी मअ़ारिफ़ व मतालिब को जामेअ़ है इसी तरह पूरे दीन और सारी शरीअ़त को एक खास तरीके से नमाज़ में समेट दिया गया है और उस लिहाज से कहा जा सकता है कि एक मुखतसर और महदूद दायरे में तमाम अहकामे इलाहिया की तामील की मश्क एक तरह से हर नमाज़ में होती रहती है, मसलन हर नमाज़ में शुरुअ़ ही में (सना में) तौहीद की शहादत दे कर, और हर रक़अत में "हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद मांगते हैं" का अरबी में अहद व इकरार कर के और आखिर में (तशह्हुद) तौहीद और रिसालत दोनों की शहादत अदा कर के

ईमान की तज्दीद की जाती है, हर रकअ़त में कम अज़ कम ''सू–रए–फातिहा'' पढ़ के (जो पूरे कुर्आने हकीम का खुलासा है) कुर्आन मजीद पर ईमान की तज्दीद होती है और उससे हिदायत हासिल की जाती है बार बार अल्लाह तआ़ला की याद और उस की हम्द व सना और तस्बीह व तक़्दीस दिल व ज़बान से की जाती है और दूसरे आजा से भी उसकी मअ़बूदीयत और अपनी अ़ब्दीयत व उबूदीयत की शहादत दी जाती है नीज़ महब्बत व हक़ शनासी और एहसान मन्दी के जज़्बे के तहत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद भेजा जाता है, अल्लाह के तमाम सालेह बन्दों के लिए दुआए खैर की जाती है, अपने गुनाहों की माफी मांगी जाती और कहर व अज़ाब से बचने और आगोशे रहमत में जगह पाने की दुआ व इल्तिजा की जाती है, यह सब ही चीज़ें नमाज़ में शामिल हैं।

अ़ला हाजा किब्ला रू खड़े हो कर और किब्ला ही की तरफ को रुकुअ़ व सुजूद करना हज की यादगार है, जो नमाज़ के शराइत में है

इसी तरह खाने पीने वगैरा की मुमानअत जो रोजे का खास्सा है, नमाज़ में भी शर्त है

ऐसे ही नमाज़ के औक़ात में अपने कारोबार और कस्बे मअ़ाश के सिलसिले को बन्द करके नमाज़ी जो माली नुक़्सान बरदाश्त करता है वह नमाज़ में माली कुर्बानी और माली इबादत (ज़कात व सदक़ात) का हिस्सा है।

फिर इसी तरह जमाअ़त में सब के साथ खड़ा होना और दीनी हैसीयत से जो शख्स बुजुर्ग तर हो, उस को अपना इमाम बना कर उस की कामिल इक्तिदा करना, इज्तिमाई जिन्दगी के मुतअ़ल्लिक़ दीन के अहम अहकामे उखूवत, मसावात और बड़ों की तौक़ीर और इताअत फिल मअ़रूफ वगैरा की तअ़मील और मश्क है जो हर नमाज़ में होती है।

यह तो नमाज़ में दीन के मुखतलिफ शोबों के मुतअल्लिक़ मुसबत अहकाम यानी अवामिर का हिस्सा हुआ, और बिल्कुल यही हाल उसके मन्फी अहकाम यानी नवाही का है कि जिस कदर भी मअ़ासियात, मुहर्रमात या मकरूहात है, नमाज़ की हालत में उन से बिल्कुल ही इज्तिनाब करना पड़ता है, जाहिर है कि नमाज़ी ब–हालते नमाज़ न झूठ बोल सकता है न किसी की गीबत कर सकता है, न किसी किस्म की बेहयाई व बेहूदगी का मुरतकिब हो सकता है, न किसी किस्म का कोई और गुनाह कर सकता है, बहर हाल नमाज़ इस खास हैसियत से पूरी शरीअत पर अमल का एक ट्रेनिंग कोर्स है और जिन्दगी को अल्लाह तआला की बन्दगी व इताअ़त और इत्तिबाअ़ शरीअ़त वाली जिन्दगी बनाने में नमाज़ की तासीर का यह एक मुस्तकिल पहलु है।

नमाज़ में इन्सानी ज़िन्दगी की दुआ और इन्सानी ज़मीर पर उस का तबई असरः–

फिर हर नमाज़ और उसकी हर रकअ़त में ''इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीम से ले कर वलज्ज़ाल्लीन''

तक अल्लाह के पसनदीदा और उसी के मुकर्रर किए हुए तरी–कए–ज़िन्दगी (यानी पूरी इस्लामी जिन्दगी) की जो दुआ की जाती है वह एक तरफ तो इस मक्सद के लिए अल्लाह तआ़ला से दुआ व इल्तिजा है और दूसरी तरफ बार बार अपनी ज़बान से इसको दुहराने और हर नमाज़ की हर रकअत में अल्लाह तआला से इस को मांगने से खुद अपने अन्दर भी इस्लाह की कोशिश का दायरा पैदा होना लाज़िमी है, इन्सान जिस चीज़ को हर दिन में दस्यों बीसयों दफा अल्लाह तआ़ला से मांगे, हो नहीं सकता कि उसके लिए कोशिश का तक़ाज़ा खुद के ज़मीर में पैदा न हो।

बहर हाल नमाज़ों में सिराते मुस्तक़ीम की दुआ बार बार की जाती है, जिन्दगी को इस्लामी बनाने में उसका असर दो तरह से और दो तरफ से पड़ता है।

निज़ामे जमाअ़त के जरीये नमाज़ की तासीरात की मजीद तक़्वीयतः–

फिर जब जमाअत के जरीये एक साजगार माहौल भी तैयार कर दिया जाए और दिन में पाँच मरतबा अल्लाह के बहुत से बन्दे मिल कर और सफों में शाना ब शाना खड़े हो कर गफ़लत बे खबरी वाली महज रस्मी नहीं बल्कि शऊर व हुजूर वाली हक़ीक़ी नमाजें अदा किया करें तो मज़्कू–रए–बाला तासीरात जितनी तेज़ तर और कवीरतर हो सकती हैं इंसानी फितरत और उसकी नफ्सीयात से वाकिफीयत रखने वालों के लिए इस का अन्दाजा करना जियादा मुश्किल नहीं हैं

सीरत साज़ी के बारे में नमाज़ की तासीरात और उसकी कारफरमाइयों के जो चन्द पहलू सुतूरे बाला में जिक्र किए गए उन्हीं पर गौर करने से अन्दाजा हो सकता है कि ईमान हम से अल्लाह तआ़ला की इताअ़त और इत्तिबाअ़े शरीअ़त वाली जिस जिन्दगी का मुतालबा करता है उस के पैदा करने और सीरत को इस्लामी बनाने में वह कितनी मुअस्सिर और किस कदर कार फरमा है।

बहर हाल नमाज़ की हैसीयत दीन के हुक्मों में सिर्फ एक हुक्म ही की नहीं है बल्कि इबादाते इलाहिया का यह वह खास निसाब है जो पूरी इस्लामी जिन्दगी की तख्लीक़ करता है और फिर उसकी नश्व व नुमा के लिए ताज़ा तरीन खून पैदा करके उसकी रगों में दौड़ाता रहता है।

अलगरज जैसा कि पहले अर्ज़ किया गया कि नमाज़ ईमान और बाक़ी अमली शरीअ़त के दरमियान की अहम कड़ी है ब–अल्फाज़े दीगर वही गोया बाक़ी इस्लामी जिन्दगी के लिए मंबअ़ (मंबा) व सर चश्मा और असास व बुन्याद है, या हमारी पहली तम्सील के मुताबिक "शज–रए–इस्लाम" का वह तना है जिस से इस शज–रए–मुकद्दसा की तमाम शाखें और फूल पत्तियां निकलती हैं और इसी पर काइम होती है।

दीन में नमाज़ का इम्तियाज़ी मक़ाम और कुर्आन व हदीस की तसरीहातः–

अगर नमाज़ की यह इम्तियाज़ी हैसियत आप ने समझ ली है तो फिर इस बात का समझना आपके लिए आसान होगा कि दीन में

नमाज़ की इतनी अहम्मीयत और इस कदर ताकीद क्यों है कि (मौलाना शाह रफीउद्दीन साहब की तहक़ीक व तफ्तीश के मुताबिक) कुर्आने पाक में मुख़्तलिफ उनवानात से सराहतन और इशारतन करीबन सात सौ जगह नमाज़ का ज़िक्र किया गया है, नीज़ उन आयात और अहादीस की हक़ीक़त भी आप पर मुनकशिफ हो जाएगी जिन में नमाज़ को दीन या दीन की अस्ल व असास कहा गया है, और नमाज़ न पढ़ने को कुफ्र या दीन से खुरूज और दौलते इस्लाम से महरूमी करार दिया गया है।

मसलन सू–रए–बक़रा की आयत –143, अनुवादः "और अल्लाह ऐसा नहीं है कि जायेअ़ हो जाने दे तुम्हारे ईमान को" में अक्सर मुफस्सिरीन के नज़्दीक नमाज़ ही को "ईमान" के लफ्ज़ से ताबीर किया गया हैं

और सू–रए–रूम की एक आयत से मफ्हूम होता है कि नमाज़ न पढ़ने से आदमी अहले ईमान से कट कर मुशरिकों से जुड़ जाता है। अनुवादः "नमाज़ काइम करो और मुशरिकों में से न हो जाओ। (अर–रूमः21) और "सू–रए–मुरसलात" की एक आयत से मालूम होता है कि नमाज़ के मुतअ़ल्लिक़ अहकामे इलाहिया की तामील न करने वाले यानी नमाज़ें न पढ़ने वाले गोया मोमिनीन के जुमरे में नहीं हैं बल्कि मुन्किरीन और मुकज्जिबीन में से हैं, अनुवाद : "जब उन से कहा जाता है कि अल्लाह के लिए झुको (यानी नमाज़ पढ़ो) तो वह नहीं झुकते, उस दिन (यानी बरोज़े कियामत) इन मुकज्जिबीन के लिए बड़ी खराबी होगी"।

(अल–मुरसलातः 48,49)

और इन्हीं आयात के मजामीन की तरजमानी की गई है उन अहादीस में, जिन में तर्के नमाज़ को कुफ्र तक पहुंचाने वाला गुनाह बतलाया गया है, मसलन हज़रत जाबिर रज़ि0 से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, अनुवादः "बन्दे के और कुफ्र के दरमियान नमाज़ छोड़ देने ही का फासिला है"।

(मिशकात–मुस्लिम)

यानी बन्दा अगर नमाज़ छोड़ देगा तो कुफ्र की सरहद से जा मिलेगा और हज़रत उबादह बिन सामित रज़ि0 से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हम को सात बातों की वीसयत फरमाई, जिन में सब से पहली और सब से अहम दो बातें यह थीं, अनुवादः "अल्लाह के साथ कभी शिर्क न करो अगरचे तुम्हें टुकड़े टुकड़े कर दिया जाए या तुम को आग में भून दिया जाए और खबरदार कभी दानिस्ता नमाज़ न छोड़ दो, क्योंकि जिसने कस्दन नमाज़ तर्क की वह मिल्लत से निकल गया"।

(अत–तिबरानी)

और हज़रत अबू हुरैरा रज़ि से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, अनुवादः "इस्लाम में उसका कुछ भी हिस्सा नहीं जो नमाज़ न पढ़ता हो"

(दुर्रे मन्सूर)

.....जारी.....

दुन्या की बका दीने इस्लाम की बका से मरबूत

आल इण्डिया मस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड का भोपाल में इज्लासे मज्लिसे आमिला

—हिन्दी लिपिः हुसैन अहमद

आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड की मज्लिसे आमिला का एकरोजा जल्सा और खवातीन का जल—सए —आम 10,11 सितम्बर 2017 को भोपाल में मुनअ़क़िद हुआ, इस इज्लास के कन्वीनर जनाब आरिफ मसऊद रुकने मज्लिसे आ़मिला थे एक रोज़ क़ब्ल अइम्—मए— मसाजिद की खुसूसी मीटिंग भी मुनअ़क़िद हुई थी, इज्लास का मरकज़ी मौजूअ़ तह़फ़्फ़ुज़े शरीअ़त था, जिस का पसमंज़र सुप्रिम कोर्ट का हालिया फैसला था, जिस में तलाके सलासा के सिलसिले में नर्म गोशा जाहिर करने के साथ यह बात रखी गई थी कि आईने हिन्द में एक दफा (धारा) ऐसी है जो अ़कल्लीयतों को तह़फ़्फ़ुज़ फराहम करती है, और हुकूमत को यह जवाज़ फराहम नहीं करती कि वह दीगर मजाहिब में मुदाखलत करे, लेकिन सुप्रिम कोर्ट का हालिया फैसला अगरचे इस बात की तस्दीक़ करता है लेकिन दूसरी तरफ तलाक़ के तअल्लुक़ से अपनी ऐसी राय देता है जिस से यह मुदाखलत जाहिर होती है, बिल आखिर मज्लिसे आमिला के इज्लास के बाद खवातीन का अ़ज़ीमुश्शान इज्लास इक़्बाल मैदान मे मुनअ़क़िद हुआ और उसके ज़रिये खवातीन की जानिब से शरीअ़त के तह़फ़्फ़ुज़ और बेदारी के लिए मुल्कगीर मुहिम का आगाज़ बोर्ड के प्लेटफार्म से हुआ, और यह तय पाया कि शरीअ़त में मुदाखलत मुसलमानों की हक़ तल्फ़ी है, और हम मुसलमान मर्द व खवातीन तमाम मुआ़मलाते ज़िन्दगी में शरीअ़त के पाबन्द हैं। चुनांचे इस आवाज़ को अदालते आ़लिया और ऐवाने बाला में पहुंचाने के लिए मुल्क के तूल व अ़र्ज़ में जल्से मुनअ़क़िद कर के क़रार दाद मंजूर कराई जाए जो सद्रे जमहूरिया, वज़ीरे आज़म, वज़ीरे कानून, चीफ जस्टिस, ला कमीशन और खवातीन कमीशन को भेजी जाए, जिस में इस का इज़्हार हो कि हम मुसलमान खवातीन व मर्द शरीअ़त पर पूरा यक़ीन रखते हैं, और तलाक़ शरीअ़ते इस्लामी का हिस्सा है, जिस पर पाबन्दी हमारी हक़ तल्फ़ी है आईन मे अक़ल्लीयतों को अपने पर्सनल लॉ में अमल की जो आज़ादी हासिल है, उसे बरकरार रखा जाए, और यह भी वाज़ेह किया गया कि शरीअ़ते इस्लामी के मआख़िज़ व मसादिर चार हैं।:—

(1) कुर्आने हकीम (2) हदीसे शरीफ (3) इजमाअ़ (4) कियास और तीन तलाक़ का ज़िक्र कुर्आने मजीद में मौजूद है और हदीस में उस की वज़ाहत है।

इस मौक़े पर सद्रे बोर्ड हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी नदवी ने फरमाया कि : कुर्आन पूरा का पूरा अपनी हर आयत के साथ मुजिज़ा है और उस का हुक्म हमेशा के लिए है, नबी की बात भी "वह्री" है और उम्मत कभी भी पूरी की पूरी ग़लत बात पर जमा नहीं हो सकती, किसी बात पर पूरी उम्मत अगर जमा हो गई है तो वह हक़ और ख़ैर ही है, क्योंकि दीने इस्लाम क़ियामत तक के लिए है और हालात जो आते रहेंगे कुर्आन, हदीस और सहाबा के तर्जे अमल और सलफ़े सालिहीन के इज्तिहाद की रौशनी में उनका हल सहीहुल फ़िक्र और रासिखुल इल्म उलमा निकालेंगे, इसी लिए जरूरत पड़ने पर उलमा ने क़ियास से काम लिया ,और उस की ताईद कुर्आन व हदीस से हासिल की, दीन के बुन्यादी मसादिर कुर्आन मजीद और हदीसे पाक को समझने वाले उलमाए हक़ ही हैं, इस लिए उन से कट कर सही इस्लामी ज़िन्दगी नहीं गुज़ारी जा सकती है।

आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड का क़ियाम शरीअ़त को ख़ारिजी दख़्ल अन्दाज़ियों और खतरात से बचाने के लिए हुआ है, इस शरीअत को अल्लाह तआला ने आज से चौदा सौ साल पहले मुकम्मल फरमा दिया था, अल्लाह तआ़ला का दीन व शरीअ़त तमाम नक़ाइस से पाक है और हर दौर और मकाम के लिए है, और पूरी इन्सानीयत की नजात व फलाह इसी में है और हमारे तमाम मसाइल का हल ख्वाह वह मसाइल अ़क़ाइद व इबादात से मुतअ़ल्लिक़ हों या मुआशरत से, घरेलू ज़िन्दगी और रहन सहन से या सियासत और आम इन्सानों के साथ मुआमलात से और खरीद व फरोख़्त की अशया और तरी–कए–कार से, सब का हल इस्लामी शरीअ़त ही करती है, और कहीं भी वह हमें आज़ाद नहीं छोड़ती। मुसलमानों और गैर मुस्लिमों में यही फर्क है, मुसलमान शरीअ़त का पाबन्द है और गैर मुस्लिम आज़ाद है, उसके लिए अल्लाह तआला ने जबरदस्ती करने को नहीं कहा है, बल्कि फरमाया है "ला इकराह फिद्दीन" (अलबकराः 256) कि दीन में ज़बरदस्ती नहीं है, इख़्तियार दिया है और उस का फाइदा जो दुन्या में हासिल होता है, और जो आखिरत में हासिल होगा, वह हम ने बता दिया है, जिस का ज़िक्र हदीसों में ज़ियादा वज़ाहत से आ गया है इस लिए हम को और हमारी बहनों को तमाम मुआ़मलात में शरीअ़त पर ही नज़र रखनी चाहिए।

तमाम ख्वातीन ने ब यक अन्दाज़ इस अपील पर लब्बैक कहा और सब्र व इस्तिक़लाल से इस्लाम मुखालिफ़ ताक़तों के अ़ज़ाइम को नाकाम बनाने का तहैया किया, अंग्रेज़ी, हिन्दी और उर्दू अख़्बारात ने नुमाया कर के इस जल्से की रुदाद पेश की। कब्ल अज़ी काज़िये शहर मौलाना सय्यिद मुश्ताक़ अली नदवी और मौलाना

खलीलुर्रहमान सज्जाद नोमानी ने खिताब किया और जल्से की निज़ामत मौलाना महफूज़ उमरीन रहमानी ने की।

अदालत को शरीअ़त में दख्ल देने का कोई हक़ नहीः-

मुल्क़ के आईन के हवाले से मज्लिसे आ़मिला आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने यह बावर कराया कि अदालत को शरीअ़त में दख्ल देने का कोई हक़ नहीं।

और यह कि दफा (धारा) 25 के तहत मुल्क में रहने वाले तमाम मज़ाहिब के मानने वालों को पूरी आज़ादी हासिल है, सद्रे बोर्ड हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी नदवी ने यह बावर कराया कि हालात आते हैं, पहले भी आए, नर्म गर्म लगा रहता है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो उस्–वए– पाक छोड़ा है, उसमें हमारे लिए बेहतरीन नमूना है, हमें सब्र व इस्तिक़लाल को नहीं छोड़ना चाहिए और उस के साथ हिक्मत व तदब्बुर से काम लेते हुए अपनी राह निकालनी चाहिए आज़माइशी हालात बराबर नहीं रहते, कितनी बार ऐसा हुआ है कि जो जान के दर्पे थे और इस्लाम को खत्म करने के लिए कमर कसे हुए थे, उन्हीं को अल्लाह तआ़ला ने इस दीन का पासबान और मुहाफिज़ बना दिया, यह दीन अल्लाह का है और दुन्या की बक़ा इससे जुड़ी हुई है, जब इस्लाम नहीं रहेगा तो दुन्या भी नहीं रहेगी, हमें (हम उलमा को) एक रहबरे उम्मत के तौर पर लाया गया है, हमारी जिम्मेदारी है कि पूरी इन्सानीयत की फिक्र करें। जैसे अम्बिया करते रहे थे। आज हो यह रहा है कि आम मुसलमान को देख कर इस्लाम को समझा जा रहा है। इन हालात में सही इस्लाम से मुतआ़रफ कराने की जिम्मेदारी उलमा पर बहुत बढ़ जाती है। दारुल कज़ा, इस्लाहे मुआशरा, तफ्हीमे शरीअ़त के कामों में वुसअ़त लाने की ज़रूरत है।

आमिला के इस इज्लास में बाबरी मस्जिद का मसअला भी जेरे बहस आया और उसके मुकद्दमात की तफ्सीलात सामने लाई गई। बोर्ड के चालीस अरकान की शिरकत ने इस इजलास की अहम्मियत को और बढ़ाया। नाएब सुदूर मौलाना डॉक्टर कल्बे सादिक़, मौलाना फख्रुद्दीन अशरफ किछौछवी, मौलाना काका सईद उमरी, मौलाना जलालुद्दीन उमरी, जनरल सिक्रेट्री मौलाना सय्यिद वली रहमानी, सिक्रेट्री मौलाना महफूज उमरीन रहमानी, एडवोकेट जफरयाब जीलानी और खाज़िन रियाज उमर के अलावा मुल्क के मुम्ताज़ व कद्दावर काइदीन मौलाना सय्यिद अरशद मदनी, मौलाना सय्यिद महमूद मदनी, बैरिस्टर असदुद्दीन उवैसी और इनके अलावा जनाब कमाल फारूक़ी, यासीन अली उस्मानी और डॉक्टर अस्मा जुहरा वगैरा ने शिरकत की, इज्लास के कन्वीनर, मज्लिसे आमिला

के रुक्न जनाब आरिफ मसऊद थे, जिन की कोशिशें इस तनाजुर में लाइक़े सताइश थीं।

दीगर मसरूफीयातः-

इज्लास के पहले दिन सुब्ह से रात तक मसरुफीयत रही, दूसरी मसरुफीयात दूसरे दिन अंजाम दी गई, खानकाहे मुजद्दिदी भोपाल, पीर सईद मियां मुजद्दिदी की वफात के बाद पहली बार हज़रत मौलाना मुहम्मद राबे हसनी नदवी तशरीफ ले गए। उन की याद उस वक़्त और ताज़ा हो गई जब उनके भाई पीर सिराज मुजद्दिदी को उन्हीं की सूरत व सीरत में देखा। वह हज़रत मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0 से देर तक तअल्लुक़ का इज़्हार करते रहे, उनकी किताब "अलमुर्तजा" की बहुत तारीफ की, और कहा कि हम ने शीआ़ हज़रात को उसकी तरफ मुतवज्जेह किया, और उनसे किताब खरीदवाई और यह महसूस हुआ कि उसके मुतालआ़ से उन का जेहन बदल गया, पीर सिराज मियां ने कहा कि हम कारोबार की दुन्या में थे, और खानकाह के राह व रस्म से हमारा तअ़ल्लुक़ नहीं था, लेकिन भाई साहब के इन्तिक़ाल से यह जिम्मेदारी मुझ पर पड़ गई, उन्होंने मौलाना अब्दुश्शकूर फारूक़ी लखनवी का भी तज़किरा किया कि उनको दादा पीर हज़रत शाह अबू अहमद रह0 से खिलाफत हासिल थी, और यहां आ कर खासा कियाम फरमाते थे, उन्होंने कहा कि हमारा इरादा खुद आप से आ कर मिलने का था, मुझे बड़ी शर्मिन्दगी हुई कि खुद आप तशरीफ लाए, बाद में वह दूसरे दिन शहरे क़ाज़ी मौलाना मुश्ताक़ नदवी के मकान पर हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी नदवी से मिलने खुद आए।

अइज़्ज़ा व अकारिब में डॉक्टर परवेज़ कुतबी हसनी के घर कुतबी मुहल्ला भी जाना हुआ जहां उन हज़रात ने कुतबी मस्जिद तामीर कराई है, वहां नमाज़ भी अदा की गई और उनकी जानिब से जुहराना तनावुल कर के डॉक्टर कलीमुर्रहमान खां नदवी के मकान पर रिहाइश रही, डॉक्टर परवेज कुतबी मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली हसनी नदवी की जद्दी शाख के रुक्न हैं, डॉक्टर रफअत सुलतान और डॉक्टर रज़िया हामिद, यह दोनों बहनें हैं, और भोपाल की साहिबे तस्नीफ खवातीन में से हैं। डॉक्टर रज़िया हामिद की किताब "नवाब सिद्दीक़ हसन क़न्नौजी" एक तहक़ीक़ी किताब है, जिस पर मुफक्किरे इस्लाम हज़रत मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0 का तफ्सीली मुक़द्दमा है डॉक्टर रफअत सुलतान ने "मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली नदवी अबकरी शख्सीयत" के नाम से किताब लिखी है, जो उन की पीएचडी0 का मकाला (शोध) है, हज़रत मौलाना मरहूम ने उस को मुलाहजा फरमाया

था जब वह मकाला ले कर लखनऊ आई थीं, हज़रत मौलाना रह0 ने फरमाया था कि उसमें एक खला रह गया है और वह वफात के बाद का खला है, यह तहक़ीक़ी मक़ाला अब जेवरे तबा से आरास्ता होने को है, बाज तहक़ीक़ात के सिलसिले में उनके इस्तिफसारात आए थे, इसलिए वहां जाना नागुजीर था, लेकिन हज़रत मौलाना राबे हसनी नदवी तशरीफ न ले जा सके, मौलाना महमूद हसन हसनी नदवी को उन्होंने अपने सवालात हवाले किए।

12 सितम्बर मंगल को "दारुलउलूम मौलाना अबुल हसन अली हसनी नदवी" के लिए ली गई आराजी में संगे बुन्याद की तक़रीब अमल में आई, जो एअर पोर्ट रोड पर शहर से सात किलो मीटर पर है। हज़रत मौलाना राबे हसनी नदवी ने दुआ भी कराई, इन्दौर व उज्जैन का प्रोग्राम भी भोपाल से जोड़ लिया गया था, जो अमल में न आ सका और मंगल को ही शाम की ट्रेन भोपाल प्रतापगढ़ एक्सप्रेस से लखनऊ वापसी हुई। मौलाना रहीमुल्लाह खाँ कासिमी और मौलाना कलीमुर्रहमान खां नदवी ने जादे सफर साथ किया और दीगर हज़रात ने स्टेशन आ कर अलबदा कहा।

(तामीरे हयात 25 सितम्बर 2017 से ग्रहीत)

❖❖❖

आप के प्रश्नों के.....

प्रश्न: किन जानवरों का झूटा (जूठा) नापाक है?

उत्तर: कुत्ते, सुअर और तमाम दरिन्दे (हिंसक) जानवर जैसे शेर, भेड़िया वगैरा का झूटा नापाक है इन जानवरों का झूटा पानी भी नापाक है मगर पानी के बारे में यह हुक्म बरतन के पानी कुंए या छोटे गड्ढों के पानी के लिए है अगर नदी या बड़े तालाब में यह जानवर पानी पियें तो उस जगह से हट कर दूसरी जगह का पानी पाक है इसी तरह बिल्ली अगर फौरन चूहा खा कर पानी पिये या आदमी शराब पीकर फौरन पानी पिये तो इन का झूटा पानी नापाक होगा।

प्रश्न: किन जानवरों का झूटा पानी मकरूहे तन्जीही है?

उत्तर: जो जानवर हराम हैं मगर घरों में रहते हैं उन से आदमी का बचना दुशवार है जैसे बिल्ली मगर उसने फौरन चूहा ना खाया हो, चूहे और छिपकिलयां वगैरा इनका झूटा मकरूहे तन्जीही है, मुर्गी अगर उसने नजासत न खाई हो उस का झूटा भी मकरूहे तन्जीही हैं अगर बिल्ली ने दूध या सालन में मुंह डाल दिया हो और मरीबी व तंगी न हो तो उसका न खाना बेहतर है लेकिन अगर ग़रीब आदमी हो तो उसके खा लेने में कोई हरज नहीं है। इसी तरह आम हराम परिन्दों (चिड़ियों) जैसे चील, कौआ, बाज, शिक्रा वगैरा का झूटा मकरूहे तनजीही है, इसी तरह जो हलाल जानवर आज़ाद फिरते हैं और नजासत खा लेते हैं जैसे गाय, बैल, भैंस, मुर्गियां और बतख वगैरा इन का झूटा पानी मकरूहे तंज़ीही है लेकिन अगर इन के मुंह में या चोंच में नजासत लगी हो और यह पानी में मुंह डाल दें तो पानी नजिस हो जाएगा।

❖❖❖

—देवनागरी लिपि में उर्दू

यह मुल्क हमारा है हम इसी के लिए हैं

(मुल्क की तक़सीम के वक़्त हिजरत करने वालों को रोकने के लिए जामेअ मस्जिद देहली में तारीख़ी ख़िताब)

—मौलाना अबुल कलाम आज़ाद रह0 —हिन्दी लिपिः हुसैन अहमद

अ़ज़ीजाने गिरामी! आप जानते हैं कि वह कौन सी ज़ंजीर है जो मुझे यहां ले आई है, मेरे लिए शाह जहां की इस यादगार मस्जिद में यह इज्तिमाअ़ नया नहीं, मैंने उस ज़माने में भी कि, इस पर लैल व नहार की बहुत सी गरदिशें बीत चुकी थीं तुम्हें खिताब किया था, जब तुम्हारे चेहरों पर इजमेह़लाल के बजाय इत्मीनान था और तुम्हारे दिलों में शक के बजाय एतिमाद था, आज तुम्हारे चेहरों का इज़्तिराब और दिलों की वीरानी देखता हूं तो मुझे बे इख्तियार पिछले चन्द सालों की भूली बिसरी कहानियां याद आ जाती हैं। तुम्हें याद है? मैंने तुम्हें पुकारा और तुम ने मेरी ज़बान काट ली, मैं ने कलम उठाया और तुम ने मेरे हाथ कलम कर दिए, मैंने चलना चाहा तुम ने मेरे पांव काट दिए, मैंने करवट लेना चाही तो तुम ने मेरी कमर तोड़ दी। हत्ता कि पिछले सात साल की तल्ख नवा सियासत जो तुम्हें आज दाग जुदाई दे गई है, उस के अहदे शबाब में भी मैं ने तुम्हें हर खतरे की शाह राह पर झिंझोड़ा, लेकिन तुम ने मेरी सदा से न सिर्फ एअ़राज़ किया बल्कि ग़फ़लत व इन्कार की सारी सुन्नतें ताजह कर दीं, नतीजा मालूम है कि आज उन्हीं खतरों ने तुम्हें घेर लिया है जिन का अन्देशा तुम्हें सिराते मुस्तक़ीम से दूर ले गया था।

मेरे भाइयो! मैंने हमेशा सियासत को जातियात से अलग रखने की कोशिश की है और कभी उस पुर खार वादी में कदम नहीं रखा, यही वजह है कि मेरी बहुत सी बातें किनायों का पहलू लिए होती हैं, लेकिन मुझे आज जो कहना है मैं उसे बेरोक हो कर कहना चाहता हूं। मुत्तहिदा हिन्दुस्तान का बटवारा बुन्यादी तौर पर गलत था, मज़हबी इख्तिलाफात को जिस ढंग से हवा दी गई उसका लाज़िमी नतीजा यही आसार व मजाहिर थे जो हम ने अपनी आंखों से देखे और बदकिस्मती से बाज मक़ामात पर अभी तक देख रहे हैं।

अब हिन्दोस्तान की सियासत का रुख बदल चुका है, मुस्लिम लीग के लिए यहां कोई जगह नहीं है, अब यह हमारे अपने दिमागों पर मुन्हसिर है कि हम किसी अच्छे अन्दाजे फिक्र में सोच सकते हैं या नहीं? इस ख्याल में, मैंने नवम्बर के दूसरे हफ़्ते

में हिन्दोस्तान के मुसलमान रहनुमाओं को देहली बुलाने का कस्द किया है, दावत नामे भेज दिए गये हैं खौफ व हिरास का मौसम आरिज़ी है। मैं तुम को यक़ीन दिलाता हूं कि हम को हमारे सिवा कोई ज़ेर नहीं कर सकता।

मैंने हमेशा कहा और आज भी कहता हूं कि तज़बजुब के शिकार मत बनो, शक से हाथ उठा लो और बे अमली को तर्क कर दो, यह तीन धार का अनोखा खंजर लोहे की उस दोधारी तलवार से ज़ियादा कारी हैं जिस के घाओं की कहानियां, मैंने तुम्हारे नौजवानों की ज़बानी सुनी।

यह फरार की जिन्दगी जो तुम ने हिजरत के मुकद्दस नाम पर इख्तियार की है इस पर गौर करो, तुम्हें महसूस होगा कि यह ग़लत है, अपने दिलों को मज़बूत बनाओ और अपने दिमागों को सोचने की आदत डालो और फिर देखो तुम्हारे यह फैसले कितने आजिलाना हैं, आखिर कहां जा रहे हो और क्यों जा रहे हो?।

यह देखो मस्जिद के मीनार तुम से झुक कर सवाल करते हैं कि तुम ने अपनी तारीख के सफहात को कहां गुम कर दिया है अभी कल ही की बात है कि यहीं जमुना किनारे तुम्हारे काफिलों ने वजु किया था और आज तुम हो कि यहां रहते हुए तुम को खौफ महसूस होता है, हालांकि देहली तुम्हारे खून की सींची हुई है।

अज़ीजो! अपने अन्दर एक बुन्यादी तब्दीली पैदा करो, जिस तरह आज से कुछ अर्सा पहले तुम्हारा जोश व खरोश बेजा था। इसी तरह आज तुम्हारा यह खौफ व हिरास भी बेजा है, मुसलमान और बुज़दिली या मुसलमान और हिरास एक जगह जमा नहीं हो सकते।

सच्चे मुसलमान को न तो कोई तमअ़ हिला सकती है और न कोई खौफ डरा सकता है, चन्द इंसानी चेहरों के गाइब अज़ नज़र हो जाने से डरो नहीं, उन्होंने तुम्हें जाने के लिए ही इकट्ठा किया था आज उन्होंने तुम्हारे हाथ में से अपना हाथ खींच लिया है तो यह तअ़ज्जुब की बात नहीं, यह देखो कि तुम्हारे दिल तो उन के साथ ही रुखसत नहीं हो गए, अगर दिल अभी तक तुम्हारे पास है तो उन को अपने उस खुदा की जल्वागाह बनाओ जिसने आज से तेरह सौ बरस पहले अ़रब के एक उम्मी की मारिफत फरमाया था "जो खुदा पर ईमान लाए और उस पर जम गए तो उनके लिए न किसी तरह का डर है और न कोई ग़म"।

हवाएं गुज़र जाती हैं, यह सरसर सही, लेकिन इन की उम्र कुछ ज़ियादा नहीं, अभी देखती आंखों इब्तिला का यह मौसिम गुजरने वाला है, यूं बदल जाओ जैसे तुम पहले कभी इस हालत में न थे।

मैं कलाम में तकरार का आदी नहीं, लेकिन मुझे तुम्हारी तगाफुल केशी के पेशे नज़र बार बार कहना पड़ता है कि तीसरी ताक़त अपने घमण्ड का पुशतारा उठा कर रुख्सत हो चुकी है, सियासी जेहनीयत अपना पिछला सांचा तोड़ चुकी है और अब नया सांचा ढल रहा है, अगर अब भी तुम्हारे दिलों का मुआमला बदला नहीं और दिमागों की चुभन खत्म नहीं हुई तो फिर हालत दूसरी है, लेकिन अगर वाकई तुम्हारे अन्दर सच्ची तब्दीली की ख्वाहिश पैदा हो गई है तो फिर उस तरह बदलो जिस तरह तारीख ने अपने तईं बदल लिया है।

आज भी कि हम एक दौरे इन्क़िलाब को पूरा कर चुके हैं, हमारे मुल्क की तारीख में कुछ सफहे खाली हैं और उन्हीं सफहों में जेब उन्वान बन सकते हैं मगर शर्त यह है कि हम उसके लिए तैयार भी हों।

अज़ीजो! तब्दीलियों के साथ चलो यह न कहो कि हम इस तग़य्युर के लिए तैयार न थे, बल्कि अब तैयार हो जाओ, सितारे टूट गए, लेकिन सूरज तो चमक रहा है, उस की किरनें मांग लो और अंधेरी राहों में बिछा दो जहां उजाले की सख़्त ज़रूरत है।

मैं तुम से यह नहीं कहता कि तुम हाकिमाना इक्तिदार के मदरसे से वफादारी का सर्टीफिकेट हासिल करो, और कासा लेसी की वही ज़िन्दगी इख्तियार करो जो गैर मुल्की हाकिमों के अहद में तुम्हारा शिआर रहा है, मैं कहता हूं जो उजले नक़्श व निगार तुम्हें इस हिन्दोस्तान में माजी की यादगार के तौर पर नज़र आ रहे हैं, वह तुम्हारा ही काफ़िला लाया था, उन्हें भुलाओ नहीं, उन्हें छोड़ो नहीं, उन के वारिस बन कर रहो और समझ लो कि अगर तुम भागने के लिए तैयार नहीं तो फिर तुम्हें कोई ताक़त नहीं भगा सकती, आओ अहद करो कि यह मुल्क हमारा है, हम उसी के लिए हैं और इस की तक़दीर के बुन्यादी फैसले हमारी आवाज़ के बगैर अधूरे ही रहेंगे, आज ज़लज़लों से डरते हो, कभी तुम खुद ज़लज़ला थे, आज अंधेरे से कांपते हो, क्या याद नहीं रहा कि तुम्हारा वजूद एक उजाला था। यह बादलों के पानी की सैल क्या है। कि तुम ने भीग जाने के खदशे से अपने पाइचे चढ़ा लिए हैं, वह तुम्हारे ही अस्लाफ़ थे जो समुन्दरों में उतर गए, पहाड़ों की छातियों को रौंद डाला, बिजलियां आईं तो उन पर मुस्कराए, बादल गरजे तो कहकहों से जवाब दिया, सर सर उठी तो रुख फेर दिया, आंधियां आईं तो उन से कहा तुम्हारा रास्ता यह नहीं है, यह ईमान की जांकनी है कि शहनशाहों के गरेबानों से खेलने वाले आज खुद अपने ही गरेबान के तार बेच रहे हैं और खुदा से इस दर्जे गाफिल हो गए कि जैसे उस पर कभी ईमान ही नहीं था।

(तामीरे हयात 25 अगस्त 2017 से ग्रहीत)

❖❖❖

तीन तलाक़ों का बयान कुर्आने मजीद में
(तीन तलाक़ों का वर्णन पवित्र कुर्आन में)

–हिन्दीः उबैदुल्लाह सिद्दीक़ी

अनुवादः– वह तलाक़े रजई दो मरतबा है फिर उन दो तलाक़ों के बाद हुस्ने मुआशरत के साथ रख लेना है या भले तरीक़े से छोड़ देना है और तुम को यह हलाल नहीं कि जो कुछ तुम उनको दे चुके हो उसमें से कुछ वापस ले लो मगर हां जब कि दोनों मियां बीवी को इस बात का ख़ौफ हो कि वह दोनों अल्लाह तआला की मुक़र्ररह हुदूद को क़ाइम न रख सकेंगे सो अगर तुम लोगों को उसका डर हो कि वह दोनों मियां बीवी हुदूदे खुदावन्दी को काइम न रख सकेंगे तो उस माल के देने लेने में उन दोनों पर कुछ गुनाह नहीं, जो औरत खाविन्द को दे कर अपनी जान छुड़ा ले यह मज़कूरः अहकाम हुदूदे खुदावन्दी हैं उनसे आगे न बढ़ो। और जो शख्स अल्लाह तआला की मुक़र्ररह हुदूद से आगे निकलेगा तो ऐसे ही लोग ज़ालिम हैं, फिर अगर दो तलाक़ भी दे दे तो वह औरत तीसरी तलाक़ के बाद उस शख्स के लिए हलाल ना होगी तावक्ते कि वह औरत उस शख्स के सिवा किसी दूसरे मर्द से निकाह न करे फिर अगर वह दूसरा खाविन्द उस औरत को तलाक़ दे दे तो अब उन दोनों पर उसमें कोई गुनाह नहीं कि फिर वह दोनों (निकाह कर के) बाहम तअल्लुक़ात वाबस्ता कर लें, बशर्ते उन्हें इसका यक़ीन हो कि वह अल्लाह तआला की मुक़र्ररह हुदूद को काइम रख सकेंगे और यह मज़कूरः अहकाम अल्लाह तआला के मुकर्रर करदः ज़ाबिते हैं जिनको वह उन लोगों के लिए साफ साफ बयान करता है जो दानिशमन्द हैं।

(अल बकरः 229,230)

तसहीलः– वह तलाक़े रजई जिसमें ख़ाविन्द रुजूअ़ करके औरत को लौटा लेने का हक़ रखता है वह दो मरतबा की तलाक़ है फिर दो मरतबा तलाक़ देने के बाद या तो उसको दस्तूर और क़ाइ–दए–शरई के मुताबिक़ रोक लेना और रख लेना है या उसको खुश उस्लूबी और भले तौर पर छोड़ देना है, और तुम को यह बात हलाल नहीं कि तुम तलाक़ देते वक़्त उन औरतों से उस माल में से जो तुमने उनको दिया है कुछ वापस ले लो मगर हां ऐसी सूरत में जब कि दोनों मियां बीवी को इस बात का खतरा और अन्देशा हो कि वह दोनों अल्लाह तआला के क़वानीन और क़ाइम करदः हुदूद की रिआयत नहीं कर सकेंगे

और उन हुदूदे खुदावन्दी को क़ाइम नहीं रख सकेंगे तो माल का ले लेना हलाल है लिहाज़ा अगर तुम लोगों को इसका खौफ हो कि वह दोनों अल्लाह तआला की मुक़र्ररह हुदूद और उसके क़वानीन को क़ाइम न रख सकेंगे तो उन दोनों पर उस माल के लेने देने में कोई गुनाह नहीं जिसको दे कर औरत अपनी जान उस खाविन्द से छुड़ा ले, यह सब अहकाम अल्लाह तआला की मुक़र्रर करदा हुदूद और उसके बयान करदः ज़ाबते हैं लिहाज़ा उनसे आगे न बढ़ो और जो शख्स अल्लाह तआला की मुक़र्रर करदः हुदूद से तजावुज़ करेगा और आगे बढ़ेगा तो यही वह लोग हैं जो अपना नुक़सान करने वाले और नुक़सान उठाने वाले हैं, (तलाक़ रजई वह है कि औरत का शौहर उसको एक मरतबा या दो मरतबा तलाक़े सरीह दे दे उस तलाक़ में शौहर को रुजुअ़ करने का हक़ होता है अगर वह चाहे तो इद्दत के अन्दर वह क़ौल से या अमल से रुजुअ़ कर सकता है, मगर इद्दत के बाद यही रज़ई बाइना हो जाती है, तलाक़े बाइना वह है जिसमें रुजुअ़ का हक़ नहीं होता मग़र हां औरत की रज़ामन्दी से दोबारा निकाह हो सकता है, आगे तलाक़ की किस्मों, मुतल्लक़ा की इद्दत, इद्दत का खर्चा वग़ैरह का बड़ा तफसीली बयान है हम उसको हज़्फ करते हुए फिर आयत की तस्हील की तरफ लौटते हैं)।

फिर अगर दो तलाक़ों के बाद शौहर अपनी औरत को तीसरी तलाक़ भी दे दे (शौहर को तीन तलाकों ही का इख़्तियार है) तो फिर वह और उस तीन तलाक़ देने वाले के लिए उस वक़्त तक हलाल न होगी जब तक वह औरत अपनी इद्दत पूरी करके किसी दूसरे शख्स से निकाह न कर ले और वह दूसरा खाविन्द उससे हमबिस्तर हो कर तलाक़ न दे दे और वह औरत उस तलाक़ की इद्दत न गुज़ार ले, फिर अगर वह दूसरा खाविन्द उसको तलाक़ दे दे तो उस औरत पर और उसके पहले खाविन्द पर इस बात में कोई गुनाह नहीं कि दोबारा निकाह कर के दोनों आपस में फिर तअल्लुक़ात वाबस्ता कर लें बशर्ते कि उन दोनों को इस बात का यक़ीन और ज़न्ने ग़ालिब हो कि वह दोनों अल्लाह तआला के मुक़र्रर करदाः ज़ाब्ते और क़ाइम करदः हुदूद को बाक़ी रख सकेंगे और यह मज़कूरा अहकाम अल्लाह तआला के बयान करदः ज़ाब्ते हैं अल्लाह तआला इन हुदूद व क़वानीन को उन लोगों के लिए बयान फरमाता है जो दानिशमन्द और जानने वाले हैं।

खुलासा:-

1. तीन तलाकों के बाद मुतल्लक़ा इद्दत पूरी करे।

2. इद्दत पूरी होने के बाद दूसरे शख्स से निकाह करे वह शौहर मर्दाना कुव्वत रखता हो।

3. फिर वह दूसरा खाविन्द उससे हम बिस्तर हो।

4. फिर वह अपनी खुशी से उस औरत को तलाक़ दे (निकाह के वक्त यह तय न हो कि हमबिस्तरी के बाद तलाक़ दे देगा अगर ऐसा हुआ तो हलाला करने वाले और हलाला करवाने वाले दोनों पर हदीस में लानत आयी है, लेकिन निकाह सही होगा)।

5. फिर वह औरत दूसरे खाविन्द से तलाक़ पाने के बाद इद्दत पूरी करे।

6. इद्दत के बाद अगर पहला खाविन्द और वह औरत इस बात का यक़ीन करें कि अब वह बातें न होंगी जो पहली दफा हो चुकी हैं और अब आइन्दा दोनों एक दूसरे के हुकूक का ख्याल रखेंगे तो दोनों निकाह करके इज्दिवाज़ी तअ़ल्लुकात दोबारा काइम कर सकते हैं।

(मौलाना अहमद सईद साहेब की तफ्सीर से इनितखाब)

कठिन शब्दों के अर्थ:-

तलाक़े रजई= वह तलाक़ जिस में शौहर को तलाक़ लौटा लेने का अधिकार हो हलाला=वैध करना, मुक़र्ररह हुदूद= निश्चित सीमाएं, तावक्ते कि= जब तक कि, वाबस्ता= सम्बन्धित, ज़ाबिते= नियम, दानिशमन्द= बुद्धिमान, रुजुअ=लौटाना, खुश उस्लूबी= अच्छा ढंग, अन्देशा= आशंका, मुकर्ररकरदा= नियत किया हुआ, तजावुज़= उल्लंघन आगे बढ़ जाना, बाइना= अलग कर देने वाली, तलाक़े बाइना= वह तलाक जिस में शौहर को लौटा लेने का अधिकार न हो, मुतल्लक़ा= तलाक़ पाई हुई औरत, ह़ज़्फ= विलोप–कम करना, हमबिस्तर=सहवास करना, इद्दत= समय–काल, ज़न्ने ग़ालिब=अधिक अनुमान।

❖❖❖

ईमां प्यारा जान से है

हम हैं मुस्लिम हम हैं हिन्दी
अपने वतन के हम हैं जुन्दी
हुब्बे वतन ईमान से है
ईमां प्यारा जान से है
अल्लाह बस माबूद है
वही फ़क़त मसजूद है
उसके नबी मुहम्मद हैं
हम सब उनकी उम्मत हैं
रहमत उन पर और सलाम
मिला उन्हीं से है इस्लाम
रहमत उनकी आल पर
उनके सब असहाब पर
उनकी जो तालीम है
हम सब को तस्लीम है
अर्ज़ो समा और रौशन तारे
शम्सो क़मर और कोह ये सारे
दरया जंगल और मैदान
हैवां सारे और इंसान
रब की सब मख़लूक़ हैं
ख़ालिक़ की मख़लूक़ हैं
यह तो नहीं माबूद हैं
यह तो नहीं मसजूद हैं
माबूद फ़क़त अल्लाह है
मसजूद फ़क़त अल्लाह है
कोई उसको गॉड है कहता
गॉड फ़क़त माबूद है
ईश फ़क़त मसजूद है

उर्दू सीखये

—इदारा

हिन्दी जुम्लों की मदद से उर्दू जुम्ले पढये।

चाँद के महीनों के सन् को हिजरी सन् कहते हैं
چاند کے مہینوں کے سن کو ہجری سن کہتے ہیں۔

हिजरी सन् मुहर्रम के महीने से शुरुअ होता है
ہجری سن محرم کے مہینے سے شروع ہوتا ہے۔

चाँद के महीनों को अरबी महीने भी कहते हैं
چاند کے مہینوں کو عربی مہینے بھی کہتے ہیں۔

चाँद के महीनों को इस्लामी महीने भी कहते हैं
چاند کے مہینوں کو اسلامی مہینے بھی کہتے ہیں۔

चाँद का महीना चाँद देख कर शुरु होता है
چاند کا مہینہ چاند دیکھ کر شروع ہوتا ہے۔

चाँद की तारीख मग़रिब के वक्त से शुरुअ होती है
چاند کی تاریخ مغرب کے وقت سے شروع ہوتی ہے۔

इस्लामी दिनों में रात पहले आती है
اسلامی دنوں میں رات پہلے آتی ہے۔

अंग्रेज़ी तारीख़ रात 12 बजे के बाद शुरुअ होती है
انگریزی تاریخ رات ۱۲ بجے کے بعد شروع ہوتی ہے۔

सऊदी हुकूमत चाँद की तारीख भी रात 12 बजे के बाद शुरुअ करती है
سعودی حکومت چاند کی تاریخ بھی رات بارہ بجے کے بعد شروع کرتی ہے۔

ऐसा उसे बैनल अक़्वामी तारीखों से मुताबक़त के लिए करना पड़ता है
ایسا اسے بین الاقوامی تاریخوں سے مطابقت کے لیے کرنا پڑتا ہے۔

दीनी उमूर में चाँद की तारीख मग़रिब के वक़्त ही से मानी जाती है
دینی امور میں چاند کی تاریخ مغرب کے وقت ہی سے مانی جاتی ہے۔